

प्रथम संस्करण, २०००

मार्च १६४१



: मुद्रक :

श्रीपतराय, सरस्वती-प्रेस,

बनारस कैण्ट ।

दो शब्द

संभव है इस पुस्तक के कुछ पाठकों की सुरुचि-भावना के प्रति यह पुस्तक बलात्कार करे, यह बिलकुल संभव और आवश्यक है। उनसे हमारा निवेदन केवल इतना है कि जीवन की अनिवार्यताओं का कोई जवाब नहीं है और यह कि जो लोग पर्दों के अन्दर रहने के आदी हैं, वे अब उन पर्दों को हटा दें और प्रकाश में आवें। प्रकाश में जीवन है।

प्रकाशक।

कार्ल और अन्ना

१

यूरोप और एशिया के सीमान्त प्रदेश के निर्जन वन्य खण्ड के सुदूर क्षितिज पर एक पक्षी से भी छोटे काले धब्बे का आगमन दिखलाई पडा। यद्यपि यह एक घटे में १०० मील की रफ्तार से उन दोनो मनुष्यों की ओर अग्रसर हो रहा था तो भी पृथ्वी और आकाश के विराट विस्तार के कारण उस नीलाम्बर में एक ही स्थान पर निस्पद खडा सा दिखलाई पडता था।

इतनी तेज रफ्तार के होते हुए भी एक पाव घटे के पहले यह निश्चित नहीं हो सका कि वह वायुयान है। वह बराबर एक ही ऊँचाई पर उड़ता रहा, पर प्रतीत ऐसा होता था एक विस्तृत वृत्त की परिधि में आकाशोन्मुख उड़ा चला जा रहा हो।

उन दोनो आदमियों के ठीक सर के ऊपर चमकते आकाश मे अवलम्बित हो, विमान-सचालक ने एक बृहदाकार क्रास नुमा

खाई देखी जो मीलों लम्बी और चौडी थी। और जिसे दोनो मनुष्यों ने उस वन्य-खण्ड की भूमि खोद कर बनाई थी।

विमान-संचालक यह नहीं समझ पाया कि इस एकान्त और निर्जन वन-प्रान्त में क्रास-नुमा खाई की क्या आवश्यकता हो सकती है। वह पश्चिम की ओर उसी ऊँचाई पर उडता चला ही गया, परन्तु अब ऐसा मालूम होता था कि एक बडा चक्कर लेकर वह पृथ्वी पर उतरना ही चाहता है। एक पाव घंटा के बाद वह उस शून्य प्रान्त के क्षितिज के पीछे डूबकर आँखों से ओझल हो गया। उस समय उसका आकार एक छोटी चिड़िया से बडा न था।

उस महा शून्य मे पुन वे दोनो आदमी एकाकी ही रह गये।

वे स्वय उस क्रास-नुमा खाई की उपयोगिता से अनभिज्ञ थे। उन्हें इतना ही मालूम था कि वर्षों पहले यह बाँध इसलिए तैयार किया गया था कि आवश्यकता पडने पर शत्रु-सेना की गति को रोकने के लिए यह पानी से भर दिया जाय।

युद्ध प्रारभ होने के साथ ही वे वन्दी बना लिये गये थे और उन्हें वहाँ पर खाद्य-पदार्थ के साथ जो हर महीने दिया जाता था, भेज दिया गया था। उन्हें एक छोटी-सी टीन की छाजनी दी गयी थी। इसी प्रकार वे बिना किसी देख-भाल के चार वर्षों से खुदाई का काम करते आ रहे थे। वे बहुधा बहुत देर-देर तक योंही बैठकर वक्त काटा करते थे। कभी-कभी वे दिन-भर वन्य-प्रान्त की घास में सोये ही रह जाया करते थे, लेकिन अंत में उन्हें अपने काम पर लौटना ही पडता था क्योंकि आदमी बिना काम किये जी नहीं सकता।

पक्षीगण इधर-उधर फुदका करते थे और टिड्डों के दल में

गम्भीर शांति विराजती थी। ऐसा मालूम पड़ता था जैसे पृथ्वी अपने जीवन के मध्यान्ह में पहुँच गई हो और किसी की प्रतीक्षा कर रही हो, किसी की आहट ले रही हो।

कुदाल से एक कीडे के दो टुकडे हो गये। उन दोनो मे से एक ने जमीन पर से कीडे के एक टुकडे को उठा लिया और उसे ऊपर फेंका। एक पक्षी ने उसे ऊपर ही झपट लिया।

'मैं हर वक्त विस्तर पर दीवाल की ओर सोया करता था और वह दूसरी ओर, और जब वह सुबह उठती थी तो इस तरह कि मैंने कभी कोई आवाज ही नहीं सुनी। वह बहुत शात प्रकृति की थी—हाँ, बहुत ही शात, तुम यह समझ लो।'

'यह तो तुमने पहले भी बतलाया था। तुम तब तक कभी नहीं उठा करते थे, जब तक गैस के चूल्हे से आवाज नहीं निकलने लगती थी।'

'हाँ, ठीक तो। चूल्हे से आवाज हर वक्त एक ही तरह की निकलती थी। कई बार मन मे आया कि उसे देखूँ लेकिन फिर लड़ाई शुरू हो गई और मुझे उसमे शामिल होना पड़ा।' विवाहित पुरुष कुदाल चलाता जा रहा था। उसकी दाढी बढ गई थी और वह मैला-कुचैला दीख पड़ता था।

उसका साथी पास ही लेटा हुआ था। वह कभी दाँतों के बीच मे एक तिनका दबाता, कभी दूसरा। 'लेकिन आश्चर्य है यह कैसे संभव हो सकता है कि उसके स्तन तो इतने तेजोमय हैं और उसके नितम्ब और अन्यान्य अग इतने भूरे।' इस पर जब विवाहित पुरुष ने कोई उत्तर नहीं दिया तो मानो उसने अपने पहले वाक्य को पूरा करते हुए कहा 'तुम्हीं तो कहते थे कि काँसे की तरह भूरे।'

'एक बार उसके सोहबत में आने पर ये बातें आप ही आप गायब हो जाती हैं।'

आध घण्टे के बाद वह फिर बोला। इस बीच में अकारण ही पक्षियों का दल उस वन्य-प्रान्त में दूर तक उड़ता चला गया था और फिर लौट भी आया था। 'लेकिन अब तो उन बातों को बीते क़रीब चार वर्ष होने को आये। कभी-कभी तो यह भी याद नहीं आता कि वह देखने में कैसी है, मैं उसकी शक्ल-सूरत तक भूल जाता हूँ। तुम जानते ही हो कार्ल, सब कुछ धुँधला पड़ जाता है। लेकिन मैं जब उसका स्वप्न देखता हूँ तो वह ऐसी सजीव मालूम पड़ती है कि मानो छू ली जा सके।'

'मैं अब अच्छी तरह जान गया हूँ कि वह कैसी दीख पड़ती है और उसकी चाल-ढाल क्या है . मैं सब कुछ जान गया हूँ।'

'लेकिन तुम्हें तो उसे देखने का मौक़ा नहीं मिला है।. वह दूर तो बहुत है, किन्तु यदि मैं उस सामनेवाले हवाई-जहाज में होता तो उसके पास अविलम्ब पहुँच जाता...हे भगवान्, कितना सहूँ ! चार वर्ष !'

'तुम्हारे लिए तो कम से कम इतनी तसल्ली है कि दुनिया में तुम्हारी याद करनेवाला भी कोई है।'

'हाँ, ठीक है। ठीक ही है।'

'कोई तो है न, जो तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है, परन्तु मेरे लिए ? जब मैं देखता हूँ चारों ओर शून्य, महाशून्य।'

'हाँ, वह प्रतीक्षा जरूर कर रही होगी, यदि वह जीती है तो।'

'वह अवश्य जीती है' दूसरे ने तुरन्त ही ज़ोर से कहा और यह कह कर जमीन पर लेट गया और वन्य-प्रांत की ओर शून्य-दृष्टि से देखने लगा। उसने उस महिला को मन ही मन

देखा जिसे कभी भी नहीं देखा था। उसने उसे देखा संदूक की धूल झाड़ते हुए उस कमरे में जिसमें उसने कभी पैर भी नहीं रखा था, देखा कि पुराने सोफा की उपरी तह को साफ करने के लिए वह धीरे से उसके समीप पहुँचकर ज़रा झुकी। वह जानता था कि सोफा कमरे के एक पार्श्व मे रखा हुआ है। वह उसके खोल के रूप और रग से काफी परिचित था।

'ए भाई रिचार्ड सुनो, ज़रा सुनो तो। यदि वह इस वक्त यहाँ होती याने तुम्हारी बीबी, तो रिचार्ड सच कहो, तुम क्या एक बार, सिर्फ एक बार ही उसके सग-सुख का लाभ उठाने का अवसर देते।'

विवाहित पुरुष ने कुदाल की मूठ पर दोनो हाथ टेक दिये और अपने चिबुक को हाथों पर। 'यदि वह यहाँ होती—' वह समझ नहीं सका कि क्या कहे।

'हाँ कहो न, रुको नहीं।'

वह अपने सामने पडे हुए मनुष्य को बड़ी देर तक देखता रहा—'हाँ मैं इजाजत दे सकता.. तुम भी तो मेरी ही जैसी बुरी हालत में हो एक बार शायद परन्तु दूसरी बार तुमने कोशिश की मैं तुम्हारा सर इसी कुदाल से चकनाचूर...समझे।'

'आज भी चूल्हे से आवाज़ आती होगी।'

बादल की छाया पड़ने लगी। टिड्डों की ध्वनि वन्य-प्रान्त में जाकर विलीन हो गई। पास ही से एक धीमी आवाज आई। यह अन्तिम टिड्डे की आवाज़ थी। उस महा-स्तब्धता में दोनो मनुष्य एकाएक अपने खून की उष्णता के स्पर्श से सिहर उठे। दूर में वन्य-खण्ड के वे स्थान जहाँ सूर्य अभी भी चमक रहा था, दीप्तिमान सुवर्ण की तरह चमक उठे।

बादल की छाया म्लान हुई, और सूर्य की कड़ी रोशनी में विलीन हो गई। ग्रीष्म की समवेत संगीत-ध्वनि एक छोर से दूसरी छोर तक गूँज उठी। घास का एक पत्ता तक हिलता नहीं था।

'परन्तु अन्ना राजी नहीं होगी। वह दूसरों के लिए नहीं है। ..मैंने तुमसे कहा ही है मिलन की प्रथम रात्रि के अवसर पर मुझ पर क्या वीती, मुझे क्या-क्या तरद्दुद उठाने पडे। वह उस समय तेईस साल की थी—परन्तु तुम से मैं पहले ही सब कह चुका हूँ। सब तुम स्वय ही समझ सकते हो।'

उन चार वर्षों के वीच—वे वर्ष जिस अवधि में उसके अरमानों के सिवा कोई साथी नहीं था—उसने अपने साथी से सब कुछ कह दिया, परन्तु साधारणत वह एक मौन प्रकृति का आदमी था। पूर्व जीवन की ओर दृष्टिपात करने से विगत जीवन के दु:ख के दिन भी—रोटी और खड भर रहने के लिए एक घर बनाने के सघर्ष के दिन—आज सुन्दर प्रतीत हो रहे थे। आज का वर्तमान और एकान्त परीक्षा के दिन के रूप मे सामने था।

उसके वर्तमान एकाकी जीवन के एक मात्र साथी कार्ल को मालूम था कि गद्दे के तीन हिस्से थे और अन्ना के नितम्ब उठे हुए और चढ़ाव-उतराव के थे, भावनाएँ उसकी नारि-सुलभ लज्जा-शीलता पर विजय प्राप्त कर लेती थीं। उसके हृदय में वेग था अन्यथा वह वहुत ही शान्त, चतुर और स्वच्छ स्वभाव की नारी थी। वह जानता था कि राख की डिविया में पीतल की मूठ लगी थी और अन्ना की देह पर तीन मसे थे साटिन की तरह भूरे। वह जानता था कि स्टोव कहाँ रखा जाता था। यहाँ तक कि उसे यह भी मालुम था कि वे तीन मसे के दाग किस स्थान पर थे।

चूँकि दुनिया मे उसका कहीं कोई अपना नहीं था, अन्ना की मूर्ति साकार होकर उसके हृदय मे उतर आई।

'पर कल्पना करो तो सही यदि उसने तुम्हारी अनुपस्थिति मे तुमसे विश्वासघात किया और वह दूसरे के साथ हो गई हो तब। पूरे चार वर्षों की अवधि, खासकर उस नारी के लिए जिसकी धमनियों में रक्त प्रवाहित होता हो, बहुत लम्बी है .. शायद तुम्हारे लिए भी यों स्थिर रहना कठिन होता यदि यहाँ घासों मे टिड्डियों के बदले स्त्रियाँ होतीं।'

'सुनो, मैं तुमसे वैसी बातें कहूँ जिसे तुम नहीं जानते हो। जब अन्ना और मैं नगर मे आये तो हम लोगों को एक छोटा-सुन्दर कमरा मिल गया और हमने तुरन्त ही उसे सामान खरीद-कर सुसज्जित किया। एक सप्ताह बाद मेरी बुलाहट हुई।'

'हाँ, हाँ, मैं सब जानता हूँ। छ मार्क्स की मासिक किश्त पर न ? 'परन्तु इसके पहले कि हम लोगों को प्रगट हो जाना पड़ेगा हम लोगों ने आपस में कहा हम लोगों को अब अपनी घर-गृहस्थी की चिन्ता करनी चाहिये, सब ठीक ठाक हो जायगा। मुझे विश्वास है वह इसे भूली नहीं होगी। उसे दूसरे विचारों के लिए फुर्सत नहीं है। घर को व्यवस्थित रखना उसे काफी उलझाये रखेगा।'

'शायद यही कारण है कि उसने—'

'तुम्हें इससे क्या ? हर हालत मे तुम्हें जबान पर काबू रखना चाहिये। और अन्ना, उसे तो मैं—परन्तु उसे जानता हूँ। वह ऐसा नहीं कर सकती।' उसने अपनी कुदाल छोड़ दी और वह सरसर करती नीचे आई।

एक तो अरमानों से भरा हृदय और दूसरी उनके फूलने-फलने

की असमर्थता—दोनो मिलकर उसे उस निरर्थक खन्दक को अधिक चौड़ा करने के कर्म में प्रेरित करते रहे। अब उसे अपनी शंकाओं को कठिन परिश्रम द्वारा निर्वासित करने मे सफलता मिली।

कार्ल जब दो वर्ष का था तो वह अपनी मा की टोपी की गाडी बनाकर खेला करता था। उसमें बडे-बडे फीते लगे हुए थे और वह फीतों के बीच अपने को घोडे की तरह जोतकर गाड़ी को बरसात के गँदले पानी से आँगन में खींचा करता था। तब से उसकी कल्पना-शक्ति ने कुछ ऐसा रुख अख्तियार किया कि उसे सुख से अधिक दुःख ही बाँटे पडा। वह सूर्यास्त तक जहाँ पडा था, वहाँ ही अपनी कल्पना मे डूबा हुआ चुपचाप पड़ा रहा और उसके साथी की उठी हुई कुल्हाड़ी की छाया दूर तक पड़ती रही।

पश्चिम की ओर सूर्यास्त के समय की रोशनी चमक रही थी। लाल सुवर्णमय गोले ने अन्तिम सीमा को स्पर्श नहीं किया था। अब घास की पत्तियों की अन्तिम कोर ही रोशनी से चमक रही थी। आगे काला तथा शात वन्य-खण्ड फैला हुआ था और पूर्व की ओर तो रजनी का आगमन हो ही गया था। टिड्डे इधर-उधर फुदक रहे थे। गर्मी से नमी की बू आ रही थी।

उस लोहार की भाँति जो अपने दिन भर का काम समाप्त कर दूसरे दिन के लिए अपने बेंच को साफ सुथरा करके रखता है, रिचार्ड ने खन्दक की खोदी मिट्टी को बाहर फेंककर अपना कोट सम्हाला।

एक पाव घटा चलते-चलते ही उनके जूते पानी के मारे पच-पच हो गये। आकाश पीला पड गया। टीन की छाजनी उस अनन्त भूरे मैदान मे पडी रही।

दूसरे दिन प्रात काल अपने खाद्य-पदार्थ को लेने के लिए कैदियों के कैम्प की ओर चले। इन चार वर्षों मे उन्हें महीने में एक बार ऐसी यात्रा करनी ही पड़ती थी। जाने मे एक दिन और आने मे एक दिन लग जाता था। जहाँ से उनके पैर उठते थे वहाँ दबी घास फिर से उठ जाती थी। शायद ही कोई पहचानने योग्य पद-चिन्ह रहता हो।

कार्ल और रिचार्ड ये दोनो कारीगर एक ही क़द के थे और दोनो का रग काला था जैसा कि कारखाने में काम करनेवालों का होता है।

कैम्प से एक कैदियों का दल कूच करने को तैयार था 'इन दोनो में से एक को लेकर अपनी सख्या पूरी कर लेंगे' यह कह कर रिचार्ड को पुकारा।

उसे कार्ल से विदा लेने की फ़ुर्सत भी नहीं मिली। पाँच मिनट बाद ही वह स्टेशन की ओर अन्य कैदियों के साथ चल रहा था। वहाँ से उन्हें दो दिन चलकर पूर्व की ओर जाना था

२

रिचार्ड के जाने के दो ही दिन बाद कार्ल कैम्प से निकल भागा। अन्ना की आकांक्षा ने उसे लम्बी यात्रा के लिए प्रेरित किया।

उसने अपने मन में पक्का इरादा कर लिया था कि वह कमरे में जाकर उसे अपनी पत्नी की तरह अभिवादन करेगा और कहेगा कि वह ही उसका पति रिचार्ड है। ऐसा करना उसने इसलिए ठाना था कि उसे डर था कि दूसरे उपाय का आश्रय लेकर उसे वह सदा के लिए अपना नहीं बना सके। यों वह चालबाज आदमी नहीं था। पर एक प्रबल आंतरिक प्रेरणा के वशीभूत हो उसका सारा शरीर किसी के प्राणों में बसेरा करने के लिए या अपने प्राणों में किसी को रखने के लिए कराह उठा था।

उसका पेशा वही था, शरीर का गठन, आँख और केशों का

रंग एक ही था, ठठेरों की तरह काली त्वचा और ठीक रिचार्ड की नाईं घनी और बाँकी भौंहें थीं—इन बातों पर तो उसका ध्यान नहीं ही-सा था।

रिचार्ड के साथ अन्ना ने जो जीवन व्यतीत किया था उसके बारे में वह रत्ती-रत्ती जानता था मानो उसमें उसका भाग रहा हो, दूसरे शब्दों मे अन्ना उसके रोम-रोम मे रम गई थी। वह उसकी कल्पना मे एक ऐसा आधार-विन्दु वन कर स्थित हो गई थी जिसकी अपेक्षा प्रत्येक को दूसरे से होती है। वह उसे प्यार करता था।

कैम्प से भागने के तीन महीने के बाद कार्ल उस नगर मे पहुँचा जहाँ अन्ना रहती थी।

उसने इतनी बड़ी दूरी पार की थी रातों-रात, जगल से होते हुए, पकडे जाने के भय से लोगों की आँख बचाते, अनेक सीमाओं को पार करते, चिलचिलाती धूप मे नदी के किनारे पैदल चलते। इस बीच शायद ही कहीं उसे छप्पर के नीचे चैन से सोना नसीब हुआ हो।

नगर के बाहर दूर-दूर पर बने इक्के-दुक्के मकान दीख पड़ने लगे। वह शहर को अच्छी तरह जानता नहीं था। अन्ना जिस मकान मे रहती थी उसका उसे ठीक-ठीक ज्ञान था। मकान का नम्बर उसे मालूम था। रास्ता भी। पास ही में मकान था। आगन्तुक के शरीर पर जमी हुई धूल शाम की तेज़ बहती हवा से धुल-सी गयी थी।

वह एक नाई की दुकान में गया और कागज़ मे लपेटी अपनी छोटी-सी गठरी को एक कुर्सी पर रख दिया। उसके ऊपर ही अपनी टोपी भी निकाल कर रख दी।

नाई ने टोपी उठाकर खूँटी में टाँग दी और उसे एक खाली कुर्सी पर बैठने के लिए इशारा किया।

बन्दी की दशा में भी कार्ल हर शनिवार को दाढ़ी बनाया करता था और उन अवसरों पर रिचार्ड से कहा करता था 'अगर तुम पहले नियमित रूप से हजामत बनाते रहे होगे और अब इतने दिनों के बाद तुम दाढी लिए हुए उसके पास लौटोगे तो वह पहले तो अवश्य ही नहीं पहचान सकेगी।'

कार्ल उस मकान की ओर शीघ्रता पूर्वक जा रहा था। उसकी खुशी और उत्सुकता देखकर ऐसा मालूम होता था कि कोई चिर-प्रवासी पति अपनी पत्नी के पास लौट रहा हो। नीचे के जीने पर एक छोटी-सी जूते की दुकान थी।

खिडकी से पुराने जूतों के तीन जोडे, एक टूटा और उल्टा हुआ गुलदस्ता और एक सोई बिल्ली दीख पडती थी। वह दुकान कार्ल की कल्पना से सर्वथा भिन्न थी। रिचार्ड के वर्णनानुसार आज से चार वर्ष पूर्व उस दुकान में कम से कम दो सौ जूतों के जोडे थे, प्रत्येक जोडे मे एक नीला कार्ड लगा था जिसमें पीले-पीले अक्षरों में दाम खुदा हुआ था। सामने ही दाहिनी ओर ठीक बीच मे एक काच का प्लेट रखा हुआ था और एक सुन्दर पेटेन्ट लेदर के जूते की जोड़ी रखी थी और उसमें एक कार्ड चिपका था जिसमें लिखा था Very Smart (अति सुन्दर)।

फिर कार्ल ने सोचा कि तब और अब के बीच मे युद्ध का व्यवधान जो है। वह एक अज्ञात चिन्ता की भावना से अपने को दबा-सा पाने लगा। आनन्द और उत्सुकता की भावना काफूर हो गई।

'दो नम्बर का मकान, दूसरी मंजिल और बॉई ओर से

दूसरे दरवाजे की तरफ' सीढ़ियों पर चढते ही उसने नक्काशीदार दीवाल पर कुछ खरोंच के दाग देखे। वे नक्काशियाँ रिचार्ड ने स्वय अपने लिए बनाई थीं। अभी भी वह सकोच से गड़ा जा रहा था। उसने सोचा कि चलूँ लौट चलूँ, फिर पीछे आऊँगा। धीरे-धीरे वह अतिम दो सीढियों पर चढ़ गया, चारों ओर नजर घुमाई, एक-दो पग आगे बढ़ा। वह अब दरवाजे के सामने था। उसने नाम को पढ़ा।

अपनी कल्पना मे उसने देखा कि अन्ना चूल्हे के सामने कार्य में व्यस्त खड़ी है, उसकी गर्दन का पार्श्व भाग दिखलाई पड़ रहा है, और उसका सर जरा-सा झुका हुआ है, वह मेज की ओर गई और फिर चूल्हे की ओर गई। उसकी गति इतनी स्वाभाविक और गभीर थी मानो उसके भाव अन्तस्तल से पूरी सचाई के साथ निकल रहे हों। वह उनसे पूर्ण रूपेण परिचित था।

कार्ल अन्ना के रूप से इतना परिचित था कि यदि भरी सड़क पर दूर से भी उसे उड़ती निगाह से देख लेता, तब भी वह उसे पहचान जाता।

चिन्ता के भार से ग्रस्त कार्ल अपनी गभीर भुजाओं को कालर और गरदन के बीच फेरने लगा। तुरन्त उसने अपने को सीढ़ी से नीचे की ओर जाते पाया।

तब तक वह दरवाजे को खट-खटाकर उसे खोल चुका था।

' अरे सामने अन्ना!'

वह खिड़की से कमरे के बीच में आई और मेज पर से एक प्लेट उठाया।

और उसने महसूस किया मानव को जीती-जागती मूर्ति

जिसकी एक-एक भाव-भगी सदीप्त जीवन के स्फुरण से स्पन्दित हो, सुन्दर से सुन्दर काल्पनिक मूर्ति से अधिक सुन्दर होती है—वह मूर्ति जो अपनी पार्श्वभूमि का सहारा पा और भी खिल उठती है, जिसकी गति मे वातावरण के स्पर्श से और भी सजीवता आ जाती है।

कार्ल का शरीर रोमांचित हो उठा। उसकी आँखों से आनन्द की किरणें फूट पड़ीं। 'अन्ना ! अन्ना ! पहचानती नहीं, अन्ना !' यह असत्य नहीं था।

उसके आनन्द को देखकर, अन्ना का भय जाता रहा। उसने एक राहत की साँस लेकर कौतूहल-पूर्वक निष्कपट-हृदय से पूछा 'आप कौन हैं ?'

अन्ना एक साधारण नील वर्ण का धुला हुआ फ्राक पहने हुई थी जिसका वह भाग जो उसके नितम्ब और छाती पर था, धूप के कारण कुछ वेरग-सा हो गया था। उसका भोला-भाला और सुगठित मुखड़ा ऐसा था जो प्रकृति के लिए एक वेगवती, सहृदय और अकलुष मष्तिष्कवाली नारी के नमूने का काम कर सकता था।

उसने अपनी गठरी टूटी कुर्सी पर और अपनी टोपी गठरी पर रख दी जैसा उसने नाई की दुकान पर किया था। 'मैं इन कुर्सियों को साफ कर अवश्य रँगवा दूँगा। जब मैंने खरीदा था उसी समय कहा था कि इनका रग बहुत दिन तक नहीं चलेगा।'

अन्ना को तुरन्त स्मरण हो आया कि उसके पति के मुख से एक बार यह बात निकली थी। वह आश्चर्य में पड गई।

'तुमने पहचाना नहीं ?'

'आप कौन हैं ?'

उसके मुख और अधर सफेद पड़ गये : 'रिचार्ड' एक हाथ मेज पर रखे हुए वह पीछे हट गई 'मेरा पति ? नहीं, तुम मेरे पति नहीं।'

'अन्ना' तुरन्त उसके पैर भावावेश से निर्जीव-से हो गये। वह दो पग आगे बढ़कर बैठ गया 'अन्ना !!'

उसकी वाणी ने उसके मर्म को छू लिया। जिस तरह नारी भाग्य की सबसे कठिन मार खाकर भी अपने दैनिक जीवन के छोटे-मोटे कार्य को करती ही जाती है, उसी तरह अन्ना स्टोव के पास गई, उसे बुझाया और तीन जली हुई दियासलाई की काठियाँ एकत्र कीं और कुछ क्षण निस्पंद सर झुकाये खड़ी रही। उसका रूप ठीक वैसा ही हो गया था जैसा कि, कुछ ही देर पहले कार्ल ने अपनी कल्पना में देखा था।

वह मुड़ी, मानो वह दूसरे कमरे की ओर जा रही हो और तुरन्त ही रसोई घर मे आ गई। उसके दूध-से स्वच्छ ललाट-पुटों पर लालिमा दौड़ गई थी।

उसका स्वभाव इतना सीधा और साफ था कि वह, जानते हुए भी, कार्ल की तरह कातर ध्वनि में बोलनेवाले मनुष्य की बातों में अविश्वास नहीं कर सकती थी। उसने कार्ल की तरफ देखा उस नारी की तरह जो एक कठिन भार से दबी हो और अपनी रक्षा नहीं कर सकती हो।

उसने कहा 'अन्ना, तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं आता ? . तुम्हारे सिवा मेरा अपना, इस संसार मे, कोई नहीं' उसके अधरों मे जीवन की सारी सजीवता, उसकी सारी विभूति और विपत्ति घनीभूत हो उतर आई थी, उसके लिए असत्य सत्य मे परिणत हो गया जब उसने कहा 'तुम मेरी पत्नी हो।'

अन्ना जानती थी कि वह झूठी बात कह रहा था पर उसकी वाणी में जो भावों की सचाई थी उसकी वह कायल थी। वह अपनी छाती के नीचे हाथ रखे खड़ी थी। इस बात पर आश्चर्य-मग्न थी कि उस कुर्सी पर बैठे अजनबी मानव के प्रति उसके हृदय मे भी कुछ अपनेपन के भाव उठने लगे थे।

वह कपड़ेवाले के पास गई 'आश्चर्य! तुम ऐसा क्यों कह रहे हो?'

उसने अपने मेज की तह से एक मैला-सा कार्ड निकाल कर कार्ल को दिया और कहा 'चार वर्ष बीते, चार वर्ष!' पुन उसने अपने हाथों को छाती के नीचे रख लिया।

कार्ल ने सेनाधिकारियों के भेजे उस कार्ड को पढ़ा। लिखा था कि ४ सितम्बर, १६१४ को एक युद्ध मे रिचार्ड मारा गया। उसने कार्ड को उलट-पुलट कर कई बार पढा और हँसकर कहा 'यह एकदम गलत है अन्ना, एकदम गलत।'

उसने उसकी ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा, 'क्या ऊल-जलूल बातें लिखते हैं सब मेरी बात पर विश्वास करो।'

वह आनन्द से इतनी विह्वल हो गई थी कि एक क्षण तो वह अपना हाथ भी नहीं हटा सकी। उसके मुख पर आशका के चिन्ह थे और साथ ही साथ उस पागलपन की आशा के भी चिह्न थे जिसके वश हो नारी यह विश्वास कर सकती है कि मृत्यु के बाद भी एक दिन दरवाजा खुलेगा और उसका पति पहले ही की तरह उपस्थित हो जायेगा।

उसने बात को बदल देना चाहा। 'शायद तुम भूखे हो?' दूसरे क्षण उसने सोचा इसे लौटा ही दूँ। पड़ोसियों को चिल्ला-कर सहायता के लिए बुलाऊँ। तब तक उसने रोटी काटी, मेज

पर काँटा और छुरी रख दी और उसके प्लेट मे मांस का एक टुकड़ा रख दिया। 'एक सेब भी तराशूँ ?'

'विश्वास है, तुमने मुझे विस्मृत नहीं किया है . '

उसके ललाट पर खून दौड़ गया। उसने सेब छीला, चार टुकडे किये, उसकी भेंटी को बड़ी चातुरी से काटा।

यह प्रथम अवसर था कि जीवन मे उसकी प्रेमिका उसका स्वागत कर रही थी।

उसने सर उठाकर देखा वह कितना द्रवित हो रहा था और मधुर मुसकान की पतली रेखा ने आकर अन्ना के मुख की गंभीरता को भंग कर दिया। उसने प्लेट को उसके समीप रख दिया।

'वह पुराना फ्राक कहाँ है जिसमे तीन एक दूसरे से छोटे टाँके लगे थे ?'

वह धीरे से मेज के पास गई और फ्राक ला दिया मानो वह स्वप्नावस्था मे हो।

उसने खुश होकर कहा 'ठीक है' और सामने मानो स्वप्ना-वस्थित बैठी अन्ना को देखता रहा।

वे बाहरी दुनिया से दूर, उस घर के लैम्प के नीचे बैठे थे। उसकी दाहिनी ओर बिस्तरा था और बायीं ओर, सामने पुराने कमरे मे सोफा। खिड़की छोटी और चौखूँटी थी। टीन मे सुरक्षित फल और आटे की ठढी गन्ध आ रही थी। दीवाल की आलमारियों पर फलों के घडे छ रखे थे। वे भूषण की तरह मालूम होते थे। जब दो मनुष्य लगातार बहुत दिनों तक साथ रहते हैं तो एक दूसरे की चाल-ढाल, बोलने के ढग इत्यादि की नकल कर लेता है। इसने रिचार्ड की

तरह ही रोटी के लम्बे-लम्बे टुकड़े किये। अन्ना आश्चर्यान्वित हो देखती रही।

कार्ल ने इतने दिनों के अन्ना के एकान्त को भग किया। उसकी प्रेरणाओं ने, भावों ने और वातावरण ने उसके हृदय मे जीवन के प्रति सोये आकर्षण को जागृत कर दिया। अन्ना के हृदय में ऐसी भावनायें उठने लगीं जिन्हें बुद्धि से कुछ सरोकार नहीं था। कभी कभी तो उसके सोचने की शक्ति नष्ट हो गई हो, ऐसा मालूम होता।

'अच्छा, मैं अब सोमवार को कारखाने मे जाकर कोई काम अपने लिए ढूँढ़ लूँगा।'

तब मुझे अब काम करने की जरूरत नहीं, अन्ना ने सोचा। तब सब काम पूर्ववत चलने लगेगा, शायद उससे भी अच्छा।

' तुम मेरे पति हो ऐसा क्यों कहते हो।'

'परन्तु अन्ना !'

'मैं उन्हें कितना प्यार करती थी। मेरे प्रति वे कितने सहृदय रहते थे। मैं उसे कभी नहीं भूल सकती।'

कार्ल के हृदय में एक ईर्ष्या की लहर दौड़ गई जिससे उसका आत्मविश्वास डिग गया। प्रथम वार वह जान-बूझकर झूठ बोलने लगा ताकि वह नारी जिसे उसने अपना समझ लिया है, उसकी पकड से वाहर न हो जाय।

उसने प्लेट को पीछे हटा दिया और चारों ओर देखा।

'खिडकी के पर्दे तो नये मालूम पड़ते हैं। हमने जो खरीदे थे वे पीले रग के थे। वेचनेवाले ने कहा था कि हम लोग बहुत नफा कर रहे हैं। तुम्हें याद आया ?'

'हाँ, याद आया। हे भगवन्।'

'और फरनीचर की जो किस्तें थीं उनका क्या हुआ, अन्ना ?'

'मैंने इन चार वर्षों मे अदा कर दीं।'

उसने अपनी भौहों को फेरा जिस तरह दूसरे अपनी मूँछ को फेरते हैं। यह आदत उसमें रिचार्ड से आई थी। अन्ना स्तम्भित हो उसे देखती रही।

'तब हम लोग बिना किसी उत्तरदायित्व और तकलीफ के अपने जीवन का नया प्रकरण प्रारम्भ कर सकते हैं। . सब काम अब सुचारु रूप से चलेगा। अन्ना, मेरी ओर देखो तो।'

उसका सर उसकी गोद मे लुढक पड़ा।

'तुम्हें फिर इसकी आदत पड जायगी।' उसकी भुजाओं मे, जो बारम्बार अन्ना के बालों पर प्रेमपूर्वक फिर रही थीं, अन्ना का प्रकम्पित शरीर शिथिल हो पडा रहा।

वह उठी। उसका बदन क्लान्त तथा गम्भीर हो गया था। उसने मेज साफ कर डाला।

कार्ल कमरे के एक कोने मे झुका हुआ चुपचाप खड़ा रहा।

एक भी अस्वाभाविक बात या ध्वनि उन दोनों को छुरी की तरह काटकर अलग-अलग कर सकती थी। उसके सारे व्यवहार से—मेज की अस्तव्यस्तता को जिस तरह उसने ठीक किया, जब-तब वह उसकी ओर देख लिया करती, खिडकी बन्द कर पर्दा लगा दिया—पता चलता था कि वह मन ही मन इस घटना के सम्बन्ध में अपनी स्थिति की परीक्षा कर रही थी, यह देख रही थी कि आगे चलकर क्या होगा।

अन्ना कार्ल के सारे प्रश्नों का तुरन्त उत्तर देती। बतलाया कि वह दियासलाई के कारखाने में काम करती थी और उसकी

आमदनी क्या थी। वह बोलती जाती और मुरझाये फूलों को चुनती जाती।

अब कुछ कार्य शेष नहीं रह गया था। वह शयन के लिए जाने को तैयार थी। वह खिडकी पर टेक देकर झुकी रही।

उन दोनो के मन में एक प्रकार की खींचातानी आरम्भ हुई—ठीक उसी तरह की जैसी उन दो प्रेमियों में होती है जो एकदम घनिष्ठ न हों, पर एक कमरे मे अपने को पाते हों।

उसने कहा—'मेरे पास ठीक पैंतीस पेन्स हैं' और कहकर बडा खुश हुआ।

अन्ना ने सोफा की ओर अँगुली से निर्देश किया 'तुम वहाँ सो सकते हो' और वह तुरन्त खिड़की के पास चली गई।

जब उसने सोफा से दृष्टि हटाकर उसकी ओर देखा तो वह सन्दूक तक पहुँच गई थी। उसने सबसे सुन्दर चादर निकाली और अपने बिस्तरे पर के एक तकिये मे खोल लगाया। उसने कहा, 'आइये, हम लोग मिलकर इसे दीवाल की तरफ खसका दें' और दोनों ने मिलकर सोफा को दीवाल की तरफ खसका दिया।

अन्ना चादर बिछाने के लिए झुकी। उसका रूप उस समय ठीक वैसा ही था जैसा कि उसने हजारों मील दूर बन्य-खण्ड में पडे-पडे कल्पना की थी।

'मैं दीपक बुझा दूँ' उसने कहा। अंधेरा हो गया। कपडे उतारते समय एक बार वह रुक कर बैठ गया और अन्ना की आवाज को सुनने लगा। शीघ्र ही अन्ना की गति भी रुकी, पैर एक दूसरे पर थे, दोनो हाथों से वह मोजे निकाल रही थी।

कार्ल पीठ के सहारे था, हाथ गरदन के पीछे और आँखें

खुलीं। वह ध्यान से सुन रहा था। कुछ समय तक कुछ सुन नहीं सका। 'क्या सो गई ?' उसने पूछा।

उसने प्रश्न की पुनरावृत्ति की और उसकी 'हाँ' की आवाज़ से जान गया कि वह भी आँखें खोले पूर्ण रूप से जग रही है।

नगर की मोटर गाड़ियों की घोर ध्वनि कमरे की गम्भीर निस्तब्धता के चारों ओर गूँज रही थी।

आवाज के घनिष्ठ परिचय के डर से वह बिस्तरे पर हिली-डुली नहीं। जब सासों के नियमित आवागमन को सुनकर उसे विश्वास हुआ तभी उसने जाकर अपनी करवट बदली।

हफ़्तों कार्ल को साफ चादर पर सोने का सुख नहीं मिला था। थकान के मारे उसके पैर दुख रहे थे। उसके मस्तिष्क-पटल पर नदी के तीर, विराट चमकीले पानी का विस्तार, पर्वत-श्रेणियाँ, घने बन, सीमाहीन साफ सडकें एक प्राकृतिक चित्रपट की तरह चमकने लगीं, आने-जाने लगीं।

उसके काल्पनिक मस्तिष्क के चिर-परिचित बाल्य के सुखद स्वप्न भी उसके सामने साकार हो गये। वह एक दश वर्षीय बालक रविवार के सुहावने प्रभात मे अपने पिता के साथ नगर से बाहर पहाड़ियों से घिरे एक ग्राम की ओर जा रहा था।

वे गाँव के एक सराय मे घुसे और एक पुराने वृक्ष के नीचे बैठ गये। पास ही फूलों से भरी एक वाटिका थी। पुराने किसान ने उन्हें इशारे से बुलाया।

कार्ल का पिता किसान की लडकी से मज़ाक कर रहा था। उसने लडकी का हाथ पकड़ा।

'तुम उसका स्पर्श मत करो' कार्ल ने कहा, 'वह अन्ना है' उसके पिता ने तुरन्त हाथ खींच लिया।

तब मालिक-किसान की लड़की ने कार्ल की गरदन मे अपनी भुजाएँ डाल दीं और वात्सल्य की दृष्टि से देखते हुए उसे गिलास भरा दूध पीने को दिया।

शान्ति और सुख के साथ उसका स्वप्न टूटा। अन्ना सो रही थी।

एक बडे ही गभीर उत्तरदायित्व की भावना से आन्दोलित हो, वह निद्रा में श्वास लेती हुई नारी के रहस्य की उधेडबुन में लगा रहा। कृतज्ञता के भाव से वह दबा जा रहा था।

३

एक समय रिचार्ड ने टीन की छाजनी के नीचे अपने कैम्प में बिस्तरे पर पडे-पडे कहा—'गौर से सुनो।' और अपने ओठों से अपने घर के चूल्हे की आवाज की नकल की।

रेल-गाडी उस मैदान में धडधड़ करती हुई क्षितिज की सीमा पर दिखलाई पड़ती थी। कार्ल दूर से आती हुई आवाज के साथ रिचार्ड की ओठों से निकली हुई ध्वनि सुनता था। उसने अपनी आँखें खोलीं।

कमरा प्रातःकालीन सूर्य-रश्मियों से भर गया था। चूल्हे पर एक ऐल्यूमीनियम की कड़ाही पड़ी थी। उसमें से गरम-गरम भाप निकल रही थी, साथ ही साथ चूल्हे के मुँदे हुए छेद से एक प्रकार की सी-सी की आवाज निकल रही थी। अन्ना का बिस्तर खाली था और उस पर की चादर सिमट ली गई थी।

'चार ? तुम तो दो से कभी अधिक नहीं लेती थी।' इतना

कहकर रोटीवाले ने अपनी रोटियों के ढेर में से अन्ना के मनो-नुकूल दो भूरी रोटियाँ निकालने के लिए हाथ लगाया। 'अब तुम्हें चार चाहिए, है न ?'

आनन्द की एक आकस्मिक प्रेरणा के कारण मुसकान की एक पतली रेखा उसके लजीले मुख पर खिल उठी। दाँतों की दो बडी, स्वच्छ और बराबर पंक्तियाँ दिखलाई पडीं। अन्ना की देह की कांति उज्वल थी। उसके बाल लाल रंग के थे, यद्यपि केशों के घने होने के कारण उनकी लालिमा छिप-सी जाती थी। आँखों के समीप उसके नाक की दोनो तरफ मुँहासे थे।

वह चार वर्षों से दियासलाई के कारखाने में काम करती आ रही थी। उसको हजारों बार प्रति दिन अपने हाथ का प्रयोग करना पडता था इस कारण उसके हाथ पतले और कुछ लचीले हो गये थे।

उसके पैरों मे बहुत सुन्दर जूते थे—वे पैर जो उसके शरीर के गठन को देखते हुए पतले मालूम पडते थे। वह ग्रीष्म ऋतु के लायक एक फ्राक पहने हुए थी और देह से चिपटे वस्त्रों से होकर उसके वदन का चढ़ाव और उतराव फूटा पड़ता था मानो वस्त्र-हीन मनुष्य की देह मे जो स्वाभाविक सुन्दरता होती है, उसकी रक्षा पूरी तरह से हो रही है। जब अन्ना ने अपने हाथ में एक बडा दूध-सा सफेद मिट्टी का बर्तन लेकर दरवाजा खोला तो देखा कि कार्ल चूल्हे को फूक रहा है।

'मैं युद्ध के पहले ही इसे ठीक कर देना चाहता था।' अन्ना की उपस्थिति का प्रभाव उस पर इतना पडा कि वह जोर से इन शब्दों को कह नहीं सका यद्यपि उस भावावस्था को देखते हुए वे शब्द झूठे नहीं होते।

उस समय अन्ना उसकी आँखों में पुष्पभूषणालकृतापूर्ण युवती के रूप मे प्रतीत हुई ।

वह दरवाजे पर खड़ी दूध की तरह स्वच्छ नारी को एकटक देखता रहा और अपने मासल एव कठोर वक्षस्थल पर खुली कमीज के कालरों को सटाने लगा। वह कोट नहीं पहने हुए था, सिर्फ पतलून और पेटी थी। उसकी सफेद कमीज पर सिकन पड़ गए थे। कुछ ही दिन पहले उसने अपने और अपने कमीज को एक नदी में साफ कर धूप मे सुखा दिया था। यद्यपि कार्ल ने बालों को बनाकर खूब अच्छी तरह से स्नान कर लिया था तो भी बन, नदी और लम्बी यात्रा की बू उसके देह से जाती नहीं थी। इसी अवस्था मे वह सभ्य समाज में पहुँचा था। जहाँ पर एक बिस्तर था, चहारदिवारी थी और थी अन्ना।

अन्ना ने उसका अभिवादन किया। उसकी आवाज उसकी आकृति, उसकी गति, देह और उसके मुख ही की तरह मीठी थी।

बगल मे गोटियों की थैली रहने के कारण झुककर, इस लचक के साथ अन्ना ने दूध की मटकी रखी कि उसका सारा अग-प्रत्यग दिखलाई पड गया।

उसने मेज को अच्छी तरह से लगा दिया मानो वह किसी घनिष्ठ मित्र की दावत की तैयारी कर रही हो। उसने एक-एक चीज की खूब अच्छी तरह से जॉच-पड़ताल की और अत में तौलिए को खूब सावधानी के साथ तह करके रख दिया। खिड़की पर खड़ा कार्ल इन सब हरकतों को देख रहा था।

रात सध्या का सकोच दूर हो गया था। अन्ना एकदम बदल गई थी मानो रात भर ही में अनायास ही जीवन के लिए

पूर्ण-रूप से तैयार हो गई। कार्ल की आँखें अन्ना का सदा पीछा करती थीं, यहाँ तक कि जब वह फल लाने के लिए उसके पास से गुजरती थी तब उसके प्रति कोर्टशिप के एक दो शब्द भी कहने की सुध नहीं रहती थी।

उसके आलिङ्गन मे अन्ना उसी तरह काँपने लगती थी जिस तरह आँधी आने के पहले वन के वृक्ष चचल हो उठते हैं।

उसकी बाँह कार्ल की गरदन पर पड़ी ही थी कि वह कुर्सी पर बैठ गई—'पहले खा तो लो।'

कार्ल को उसके शब्दों मे स्वीकरण का आभास मिला।

उसने रोटी काटी और उसको देते हुए कार्ल को एक नजर से देख लिया। वह खा नहीं सकी। वह अपनी छाती पर हाथ रखे हुए ठगी-सी देखती रही।

'तुम्हारी बाहें कितनी सुन्दर हैं अन्ना, कितनी सुन्दर!'

वह उठी और खिड़की के पास चली गई।

अन्ना की मुसकराहट में स्वीकृति का आभास पाकर कार्ल धीरे-धीरे उसके पास गया और उसे अपने भुजपाश मे बाँध लिया, वे एक दूसरे से आबद्ध गतिहीन खड़े रहे।

जब उसने अपनी आखें उठाईं और देखा कि अन्ना के अधर खुले हैं और काँप रहे हैं तो उसने उन्हें बार-बार अपने अधरों से लगाया, पर वह एक शब्द भी न बोली।

उसके स्तन और गरदन पतले वस्त्र से खूब कसकर बँधे थे। उसने बटन खोल दिया।

शिथिल हो, अन्ना ने स्वय मुसकराकर गर्दन पर की पेटी खोल दी और वस्त्र खुलते ही उसकी तरफ जाकर लेट गई।

बिछावन के सफेद चादर पर सूर्य की रोशनी पूर्ण रूप से
पड रही थी।

कार्ल ने अपनी पेटी उत्तेजित होकर खोली और पीछे गया।
उसे इस बात का पूरा विश्वास था कि दरवाजे में ताला है और
उसकी कुञ्जी भी है जिसके कारण वह अपने को सुरक्षित कर
सकता है।

तदुपरान्त वह अन्ना के सामने खडा हो गया जहाँ वह धूप
में पड़ी हुई थी। सचमुच ससार में अपनी प्रेमिका के प्रेम मे
अखण्ड विश्वास तथा उसके आत्म-समर्पण से बढकर आनन्द-
दायक दूसरी कोई वस्तु नहीं है।

कार्ल आनन्द-मग्न हो वहाँ ही खड़ा रहा। तब तक अन्ना,
मानो उसकी प्रणय-दृष्टि के रस में सराबोर हो मछली की तरह
उछल पडी और उसे अपनी ओर खींच लिया।

उस अहाते में छ गिरे हुए मकान थे। एक ब्लाक था और
तीन आँगन थे। उसमे कारीगरों के सौ परिवार रहते थे जिन्हें
युद्ध ने एक ही अवस्था में ला पटका था—वही दु ख, वही
अर्थाभाव, वही रोटी के टुकडे और वही रोग।

बच्चों की आवाज तालाब में मेंढकों की आवाज की तरह
सुनाई पड़ने लगी, कभी-कभी वे मिलकर चिल्लाते थे, उनके
लिए कुछ देर तक चुप रहना सर्वथा असम्भव था। उस रविवार
के दिन वे लड़के मुँह से बजाई हुई सीटी के ताल पर गा रहे थे।

एक किशोरी उछल पड़ी और खिड़की के छड में
लगी हुई साइकिल की घण्टी को बजाकर कान लगाकर सुनने
लगी।

एक क्षण बाद उसने सामने की खुली खिड़की पर अपनी रात

की पोशाक को पहन कर अपनी साइकिल की घण्टी को बजाया और टेलीफ़ोन की तरह अपने कान पर हाथ लगाकर कहने लगी। 'मैं हूँ एल्फी।'

'नमस्ते एल्फी। मैं हूँ एल्मा। रात तो अच्छी कटी न ?'

'अच्छा एल्मा तुम हो ! बड़ी कृपा की जो मुझे याद की !'

ये दोनो सखियाँ एक ही छत पर रहती थीं और जब वे 'टेलीफ़ोन' से बातचीत कर रही थीं तो एक दूसरे का मुख दिखलाई पड रहा था। इन दोनों में एक सिर्फ आँगन का अन्तर था जो अठारह फीट से अधिक न था।

'आज क्या पहनोगी एल्मा ? मैं तो आज नीला वस्त्र पहनूँगी।'

'मुझे यह मालूम था। मैं सोचती हूँ कि आज मैं पीला ही वस्त्र पहनूँ।'

दोनो के पास रविवार के दिन पहनने योग्य एक ही फ्राक था जिसे वे कभी-कभी आपस मे अदल-बदल भी लिया करती थीं।

'मैं आज शाम को सिनेमा देखना चाहती हूँ वहाँ पर कैसी कर्कश आवाज हो रही है।'

मकान की चौथी मंजिल के एक कमरे में अन्ना की एक सखी रहती थी। वहाँ एक फोनोग्राफ से जिसमे एक कुत्ते की तस्वीर थी, सैनिकों का लड़ाई पर कूच करनेवाला बाजा बज रहा था जिसकी ध्वनि पर लाखों सैनिक युद्धक्षेत्र के लिए कूच कर जाते थे।

'यह आवाज असह्य है। मैं अभी उसे बन्द करने जा रही हूँ। मैं तुम्हें थोड़ी देर बाद बुलाऊँगी' एल्फी ने अपने साइकिल

की घंटी दबाई। एल्मा की घंटी रण-यात्रावाले बाजे के ऊपर चिल्ला उठी। दोनों लड़कियाँ गायब हो गईं।

नीचे सुन्दर केशोंवाला एक चार वर्ष का बालक खड़ा था। वह आकाश की तरफ आँखें उठाकर गा रहा था जिसका अर्थ यह था कि मेरीशेन का पुत्र हुआ है पर वह उसके पिता को नहीं जानती।

तब तक दरवाजे को किसी ने खटखटाया। अन्ना अपने बिस्तरे पर ही चिहुँक उठी। उसकी बाहें उसकी छाती पर थीं। लेटर-बक्स के छेद से होकर अखबार गिरा।

'तुम तो ऐसी न थी अन्ना। तुम अधिक लजीली थीं' कार्ल बिस्तर पर पड़ा था और इसी ध्यान मे मग्न था कि पहले अन्ना उसके साथ कितनी लज्जा से व्यवहार करती थी। 'क्या तुम्हें याद नहीं कि तुम इसके लिए कितनी बहानेबाजी करती थीं। तुम सदा ही दूसरी तरह लेटती थीं।'

अनिच्छापूर्वक वह उससे दूर हटकर उसको ओर एकटक देखने लगी। इस बात पर आश्चर्यान्वित थी कि कार्ल को उसके सम्बन्ध की इस गुप्त बात का भी ज्ञान है। उसका मुख आश्चर्य से भर गया और वह संज्ञा-शून्य की हो गई मानो सोचने की शक्ति छुरी से काट कर उससे अलग कर दी गई हो।

'बिल्कुल दूसरी ही तरह' कार्ल ने उसके दाहिने कंधे को जरा-सा अपनी ओर खींच कर कहा 'इस तरह'।

उसका सिर स्वयमेव झुक गया। इस सुपरिचित शरीर-आकृति मे रिचार्ड के साथ का भूतपूर्व जीवन साकार होकर उसके सामने खड़ा हो गया। इस आत्मसमर्पणावस्था में उसे पूर्ण विश्वास हो गया कि उसके भुजपाश में आबद्ध मनुष्य

रिचार्ड के सिवा दूसरा नहीं और वह धीरे-धीरे उसके नाम का उच्चारण करने लगी। उस समय उसके लिए भूत और वर्तमान दोनो मिलकर एकाकार हो गये थे।

इसके बाद कार्ल को पति समझने की भावना जमाए रखने के लिए अन्ना को प्रयत्न करना पड़ा। उसे पता चला कि यद्यपि दबाव देकर विश्वास पैदा तो नहीं किया जा सकता पर किसी डिगानेवाले विचार को मन में आने से रोका अवश्य जा सकता है।

कार्ल रिचार्ड नहीं है, इस सशयात्मक विचार को जब वह दबाना चाहती थी तो उसे इतना जोर लगाना पड़ता था कि उसके वक्षस्थल और नाभिस्थल पर शिकन पड़ जाती थी।

कार्ल तो उसके प्रेम में इतना सराबोर था कि इस तरह की शका उसे छू भी नहीं सकती थी। जब वह प्रेम के आदान-प्रदान की मदिरा पीकर विभोर हो जाता, उस समय उसे एक ही बात की चिन्ता रहती कि किसी भी तरह कठिन परिश्रम करके अन्ना के साथ अपने जीवन को पक्की नींव पर स्थापित कर सके।

नगर में आने और युद्ध के प्रारम्भ होने के बीच के एक सप्ताह की अवधि में रिचार्ड ने 'क्रिप्प और प्राफ्स नामक' एक कारखाने मे काम किया था पर उसकी आमदनी से वह सतुष्ट नहीं था।

अन्ना जब कपडे पहन रही थी तो कार्ल ने कहा कि वह 'क्रिप्प और प्राफ्स' के कारखाने में काम ढूँढ़ने की चेष्टा नहीं करेगा, वे गरीब हैं और पारिश्रमिक भी अच्छा नहीं देते।

इस पर स्मृति ताजी हो गई और वह सिहर उठी। उस विभोरावस्था मे सिहरन भी दूर हो गई। मालूम होने लगा

कि जमीन से उठकर आकाश मे उड रही है। वह ऐसी सुखमय और तरल मनोदशा मे पहुँच गई जहाँ आलोचना पहुँच भी नहीं सकती।

जब वह दिन के लिए भोजन-सामग्री खरीदने के लिए नीचे उतरती तब वही सुपरिचित सीढ़ियाँ रहतीं, पर आज एक विचित्र प्रकार से बदली-सी मालूम पड़ती थीं। सीढ़ी से उतरने-वाली नारी स्वय बदल गई थी।

वह धूप से भरी प्रात कालीन स्वच्छ वायु के स्पर्श से तरो-ताजी सडक पर उतरी। सब व्यस्त थे। एक बुढ़िया अपने कधे पर टोकरी लिये इधर-उधर लड़खडाती चलती थी। खेल में लडके शोर मचा रहे थे। एक मॉसवाले की गाड़ी जा रही थी। कारखाने मे काम करनेवाले अपनी रविवारवाली कमीज की बॉह चढ़ाये अपने दरवाजे के बाहर आपस में गप्प कर रहे थे। उसे मॉसवाली दुकान पर जाकर कितना माँस चाहिये, इसे बतलाना था। उसे हिसाब लगाकर देखना था कि दो आदमियों के लिए कितना मॉस काफी होगा। हृदय पर मस्तिष्क ने विजय पाई। उसने सर उठाया, सारी बातें साफ-साफ दिख-लाई पड़ने लगीं।

'नहीं, नहीं, इतने से नहीं होगा। एक पाव और दो' उसने मॉस बेचनेवाले से कहा।

क्योंकि उसके कमरे मे एक आदमी था, फिलहाल अतिथि ही सही! उसे भी तो भोजन की आवश्यकता थी।

हाँ, सो तो ठीक है, परन्तु उसके और अतिथि के बीच तो महान् अन्तर है। वह जो ऊपर कमरे में आदमी है, उससे उसे क्या वास्ता? वह कल ही तो आया है। उसने चार वर्षों की

लम्बी अवधि अकेली बिताई है। एकाएक कल ही एक आदमी टपक पड़ा है।

और उस दिन प्रात काल ? उसे क्या हो गया है ? 'मुझे हड्डी भी चाहिये झोल बनाने के लिए।' यह कैसे सभव हो सका ? एक अजनबी जिससे जान न पहचान। वह विचार-शून्य हो चारों ओर देखने लगी।

रास्ते मे उसे अपने परिचित मित्र से भेंट हो गई जो आटे और सामान की दर मे वृद्धि को कोस रहा था। अन्ना उसकी ओर आश्चर्य से देखने लगी।

'अच्छा, देखें तो सही। गृहस्थी चलाने के साप्ताहिक व्यय पर इसका क्या प्रभाव पडता है।' उसका मित्र हिसाब लगाने लगा।

अन्ना घर जाने से डरती थी। वह वहीं था। वह चाहती थी घर लौटने पर कोई मिले नहीं। वह अकेले ही सोचना चाहती थी। उसे किस तरह व्यवहार करना चाहिये ? इन सब का परिणाम क्या होगा ? इत्यादि इत्यादि।

अन्ना का स्वभाव बहुत कुछ उन नारियों से मिलता-जुलता था जो अपने सकेत-स्थल को छोडकर सड़क पर आकर एक दूसरी ही वायु की साँस लेती है, जब सडक पर के मस्त आदमियों को देखती हैं तब उनके होश ठिकाने आते हैं और वे समझ नहीं पातीं कि उन्होंने क्या किया है।

अन्ना सीढ़ियों पर चढने लगी। उस समय वह उन्हीं भावों के बोझ से दबी जा रही थी जो अपने यार से मिलकर अपने पति के घर मे लौटनेवाली विश्वास-घातिनी पत्नी के हृदय मे उठते हैं। वह छत की पहली ही मजिल पर ठहर गई। एक

आदमी इतनी विस्तृत दुनिया के कोने से निकलकर मेरे कमरे मे प्रवेश करता है। उसे हमारे अतीत जीवन की सारी बातें मालूम हैं, मुझसे भी ज्यादा! मेरे कपडे उतारने के पहले ही वह बतला देता है कि मेरी देह पर तीन मुँहासे के दाग हैं। वह एक के बाद एक नई बात बतलाता है और सारी विगत स्मृतियों की याद दिला देता है। अन्ना बराबर दीवाल की नक्काशियों की तरफ देखती रही। वह दो मंजिल ऊपर जाकर अपनी सखी से मिलना पसंद करती। वहाँ पर सब चीजें पूर्ववत् और सुरक्षित रीति से रखी हुई थीं। वह अपनी सखी से मिलकर सारी बातें कहती और राय लेती, परन्तु उसी के अपने कमरे में कुर्सी के ऊपर सफेद कमीज दिखलाई पड़ी। अस्त-व्यस्तता कमरे मे प्रवेश करने पर वह उसे क्या करते पायगी? वह खिडकी के पास तो नहीं? सारी बातें सच्ची निकलीं। परदे नए थे। जब वे खरीदे गये थे तब बेचनेवाले ने कहा था बाबू जी आप बडे नफे मे है। इसी बात को किसने अक्षरश दुहरा दिया? रिचार्ड ने उसे बतला दिया था कि बेचनेवाले की खूब सटा कर कटी हुई काली मूछें हैं और ललाट पर दो मुहाँसे के दाग।

मेरी उससे कल ही जान पहचान हुई। दरवाजे को खट-खटाने के पहले ही अन्ना कह कर पुकारना रिचार्ड के लिए संभव नहीं। यह जरूर कोई छलिया है! हाँ, छलिया! छिः मैंने उसके साथ ऐसा काम किया और अपने ऊपर क्रोध और घृणा की भावना से वह दब गई।

उसने सोफा पर से चादर वगैरह हटा कर उसे दीवाल की तरफ खसका दिया था। जलपान का मेज साफ कर दिया था। अन्ना का बिस्तर भी समेट कर रख दिया गया था यद्यपि उसमें

दक्षता का अभाव था। सारा कमरा साफ-सुथरा दिखलाई पड़ता था। जब वह पहुँची तो कार्ल लम्बी झाड़ू से दूसरी बार धूलि के अन्तिम कण को बुहार रहा था।

उसने सोचा रिचार्ड भी कभी-कभी घर का काम करता था, परन्तु वह ऐसा खुश नहीं दिखलाई पड़ता था।

जब उसने कार्ल को, एक ईमानदार झाड़ू देनेवाले की तरह जो रास्ते चलनेवाले से बात करने के लिए काम बन्द कर देता है, देखा तो उसका सारा क्रोध, सारी घृणा और एक दगाबाज के साथ अपने को खो देने पर जो पश्चात्ताप के भाव होते हैं, वे दूर हो गये।

प्रातःकाल की प्रणय-कथा की उसे याद आई। उसे विश्वास हो गया कि रिचार्ड के सिवा दूसरे को उसने आत्मसमर्पण नहीं किया है, परन्तु वह जो झाड़ू को लेकर झुका हुआ आदमी है वह तो रिचार्ड नहीं है। उसके पति और कार्ल में, अतीत और वर्तमान में, स्पष्ट अन्तर है।

वर्षों तक उसने रिचार्ड को इतने समीप से साफ-साफ नहीं देखा था जितना वह आज देख रही है। वह कार्ल से एकदम विभिन्न था—अधिक ढीला-ढाला और सुस्त, और कभी भी ऐसी बातें नहीं करता था जैसी कि कार्ल ने एक दिन पहले कीं। उसने कहा था कि एक मैदान में बिना घास को चबाये हुए शायद कोई अधिक देर तक पड़ा नहीं रह सकता। रिचार्ड एक शान्त प्रकृति का मनुष्य था और उसे देखकर विश्वास उत्पन्न होता था। उसकी देह परिश्रम के कारण कठिन हो गई थी। वह इस आदमी की तरह आक्रमणकारी नहीं था। यह आदमी लपेटे हुए स्प्रिङ्ग की तरह था। समय पर वह तेज

और भयानक रूप भी धारण कर सकता था—यह बात अन्ना
ाड़ गई थी।

आज प्रातःकाल की घटना ने रिचार्ड के साथ की सारे
प्रतीत जीवन की कथा को उसके सामने उपस्थित कर दिया
ा और यह दोनों के बीच एक दीवाल की तरह खडी हो
ाई थी।

एक बिस्तरे पर रहने पर भी वह इतनी हतबुद्धि कैसे हो
ाई कि उसने एक क्षण के लिए भी विश्वास कर लिया कि यह
आदमी रिचार्ड है। उसका रिचार्ड! और इतने पर भी वह
सके साथ बिस्तरे पर रही! यह तो उसी की भुजाएँ थीं उसी
ा मुख था। अभी भी वह अजनबी या असुखकर नहीं मालूम
होता था। आश्चर्य! यदि वह इस बात पर जोर देना छोड़ देता
के वह रिचार्ड है तो अन्ना को, जो कुछ उसके साथ वह कर
चुकी थी उसके लिए उसे दुःख नहीं होता।

'तुम वहाँ क्या कर रही हो? यह तुम्हारा काम नहीं।'

'तुम इस तरह से क्यों बोल रहे हो?'

वह एकाएक मुँह बनाते हुए उसके पास से हट गई। 'फिर
कभी मत कहना कि तुम मेरे पति हो। सुनते हो न? फिर कभी
नहीं!' उसकी आँखों मे क्रोध के आँसू आ गये थे।

'परन्तु आज सुबह तो तुमने स्वयं ही ऐसा कहा था कि मैं
तुम्हारा पति हूँ। तुमने मुझे रिचार्ड कहकर पुकारा था हम
और तुम एक हैं।'

'नहीं, हम और तुम कभी एक नहीं। मैंने जीवन में तुम्हें
पहले कभी नहीं देखा। तुम अभी कल आये। मेरा पति जीवित
हो सकता है—तुमने स्वयं ऐसा कहा है। वह लौट आ सकता है।'

'तो इससे क्या ? उसके लौटने से क्या ? तुम क्या समझती हो, क्या होगा ?' उसकी आँखों मे एक खूँखारपन टपकने लगा जो प्रगाढ़ होता गया। उसके अधर फड़क रहे थे पर वह जोर से नहीं बोला 'मुझे परवाह नहीं कौन आयेगा या नहीं आयेगा। हम लोग एक हैं।'

उसके मुख के स्नायुओं का खिंचाव दूर हुआ। उसका चेहरा कोमल पड़ गया। 'यह सब भाग्य है, अन्ना भाग्य' उसने बार-बार कहा। उसकी वाणी और मुसकराहट से गम्भीर विश्वास की झलक दिखलाई पड़ रही थी।

कार्ल की नासिका सुडौल थी, भुजाएँ सशक्त और आँखों से तेज झलकता था।

अन्ना को हँसी-सी आ गई। उसकी आकृति हास्योत्पादक हो गई क्योंकि आवेश मे वह पैर के अँगूठे पर खड़ा हो गया था और उसे झाड़ू की मूठ को कस कर पकड़ना पड़ा ताकि वह गिर न पड़े। पुन उसके भावों की शक्तिशालिता तथा समीपता ने उसकी सच्चाई के सम्बन्ध की सारी शंकाओं को दूर कर दिया। उसकी दुर्दान्तता के कारण, जिसे उसने अपनी प्रबल इच्छा-शक्ति से दबा रखा था, उसकी भूरी आँखें विस्फारित हो गई थीं।

वह बुद्धिपूर्वक तो नहीं, पर क्रोध, अवज्ञा और सानुकूलता के सम्मिलित प्रभाव से उत्पन्न एक आंतरिक प्रेरणा से महसूस कर रही थी कि यदि वह उसके पति होने का दावा छोड़ दे, स्वय अतीत बनना छोड़ दे तो उस अतीत पर जिसे उसने स्वय जगाया है, विजय प्राप्त कर सकता है।

नहीं, यह बहुत ज्यादा है। वह हम पर रोब गालिब करना चाहता है। 'अनर्गल' वह अचेतन रूप में अपने हृदयस्थ

भावों को कह उठी। वह खिड़की के पास बैठी थी, सब्जी की कड़ाही उसके हाथ में थी और उसकी अँगुलियाँ उसे छीलने और तराशने मे व्यस्त थीं। वह उठी, कड़ाही को फेंक दिया और गाजर पर अपनी झुँझलाहट प्रकट करने लगी।

काम मे व्यस्त अन्ना ने एक अन्यमनस्क आकृति धारण की, परन्तु जिस तरीके से वह उठ खड़ी हुई, अपने आँचल मे लगे गाजर के टुकड़े को झाड़ा, चूल्हे पर कड़ाही को ले गई, जिस ढंग से उसने अपने नितम्ब को हिलाया—अर्थात् उसकी प्रत्येक गति से साफ मालूम होता था कि यदि वह अकेली या सोफा पर उसके पार्श्व में बैठे मनुष्य के प्रति उदासीन होती तो उसकी गति वैसी न होती।

वह वहाँ दुबक कर बैठा हुआ था, सर हाथ मे था और हृदय मे ऐसे दृढ़ भाव थे जिन्हें शारीरिक शक्ति या इच्छा शक्ति से ही चरितार्थ करना सभव नहीं था। वह एकाएक क्रोधावेश में उठ खड़े होकर अपनी माँग पेश ही करने वाला था 'यदि तुम नहीं स्वीकार करतीं तो मैं फिर अपना रास्ता देखूँगा।'

पर रास्ता का क्या अर्थ है वह अच्छी तरह जानता था। यह अर्थ हड्डी-हड्डी तक परिव्याप्त था और विगत जीवन के चेतना-विहीन एकान्त से पूरी तरह परिचित था।

उसे याद था कि उसने एक बार रिचार्ड से कहा था: 'मनुष्य सदा प्रश्न ही करता रहता है कि वह इसे कैसे सह सकता है पर उसे कोई उत्तर नहीं मिलता। मेरा जीवन उस कीड़े की तरह है जो गर्म बालू के मैदान से होकर हजारों मील चलता रहता है। मेरा जीवन वैसा ही अर्थहीन और शून्य है।'

सशक्त चरित्र और उबलती हुई शक्ति—जो दस मनुष्यों के लिए काफी है—के रहते भी कार्ल को एक आदमी की आवश्यकता थी जिसका आश्रय लेकर वह जी सके।

वह सोफा पर पड़ा रहा। वह जानता था कि वह चला भी जाय तो दूसरे ही दिन लौट आयेगा। उसके अन्दर से जो क्रोध का उबाल आ रहा था उसे वह उसी इच्छा-शक्ति की प्रबलता से रोके हुए था जिसके सहारे वह अपने ध्येय की प्राप्ति मे समर्थ हो सका था।

बिना अपना सिर फिराये ही उसने एकाएक कहा 'पति की मृत्यु के सवाद पाने पर मैंने जो कुछ अपने एक मित्र से कहा था, वह शायद तुम्हें मालूम होगा। मैं सोचता हूँ।'

'मैं तो सोचती हूँ कि मैंने विवाह के पूर्व एक बालिका के रूप में जो कुछ किया था, वह भी जानते होगे।' क्रोधावेश में कहना चाहती थी 'या मेरे जन्म के पूर्व की बात भी।'

इस पर उसने गम्भीरता से उत्तर दिया, 'नहीं, मैं नहीं जानता, परन्तु यह मुझे मालूम है तुम किस स्वभाव की लड़की थी। बहुत प्रदर्शनशील तो नहीं परन्तु दूसरी बालिकाओं की तरह मुहर्रमी सूरतवाली भी नहीं। जब तुम्हारी मा चोरी करती थी तो तुम ऊबती नहीं थीं। तुम धैर्य रखना जानती थीं और सदा तुम प्रसन्न-चित्त रहा करती थीं। मेरा विश्वास है तुम सेब की तरह खिलती गईं और उत्तरोत्तर खिलती ही जा रही हो।'

तब तक उसने अपने हाथ से सर नहीं उठाया था। 'मेरे हृदय में एक चीज़ की प्राप्ति के लिए सदा चाह बनी ही रही। तुम्हें शायद इस बात का ज्ञान नहीं है कि चाह कैसी होती है। शायद इस समय भी नहीं।'

दूसरे मनुष्य की कल्पना-शक्ति द्वारा अन्ना ने सर्वप्रथम अपने बाल्यकाल और किशोरावस्था को देखा मानो उसके प्रेम के स्पर्श से उसमे दिव्य दृष्टि आ गई हो। उसने एक भावावेश के साथ बाल्यकाल की बातों का अनुभव किया।

कार्ल के वक्तव्य को समाप्त करने के पहले अन्ना की भुजाएँ शिथिल हो गईं। उसने द्रवित हो पूछा—'तुम कह क्या रहे हो, बोलो!'

कार्ल ने सोचा कि उसके हृदय में जो भाव उठ रहे हैं, यदि वे सच्चे हैं तो दो बातों मे से एक ही बात हो सकती है—या तो वह मुझे प्यार करती है और नहीं तो सबका अत है।

'जब तुम्हारे पति की मृत्यु की खबर झूठी—खबर मिली तो तुम्हें बहुत ही सदमा पहुँचा होगा, जैसा किसी नारी को हो सकता है। मैं जानता हूँ कि तुम्हारे हृदय मे इस समय ऐंठन-सी हो रही है। तुम विश्वास नहीं कर सकती थीं कि यह घटना घटी है या कभी घट भी सकती है। तुम पेड की पत्ती की तरह हो—दीखती भी हो उसी तरह। शायद विश्वास करके भी तुम इस पर विश्वास नहीं करती हो। इसके बाद वह भी समय आया जब तुम्हें एक अर्थशून्य जीवन इतने दिनों तक बिताना पड़ा। आदमी हृदय मे अरमानों को पोसता हुआ जीता रहता है। मैं स्वय उस अवस्था से गुजर रहा हूँ क्या तुम्हें इस अरमानवाले जीवन का अनुभव है?'

अन्ना कभी भी रिचार्ड से असन्तुष्ट नहीं थी। उसके मन मे कभी भी ऐसी भावना नहीं आई कि रिचार्ड उसे गलत समझ रहा है, न तो उसने कभी यह भी सोचा वह उसको जानता है। वे आपस मे जीवन की चिन्ताओं के सिवा किसी दूसरे विषय

पर बातचीत नहीं करते थे। अभी भी वह दोनों आदमियों की तुलना नहीं कर रही थी। वह चुपचाप लज्जा से गडी खडी थी कि क्यों उसने उसको कपटी समझा ? कितने बार ऐसा मालूम होता था कि कार्ल एक शब्द, एक दृष्टिपात या एक वाणी द्वारा उसके हृदय के रिक्त स्थान को रस से सराबोर कर उत्तेजित कर देना चाहता था। कल रात ही से उसके हृदय में ऐसी भावना जागृत हो रही थी कि उसके हृदय-प्रदेश मे ऐसे स्थल भी थे जिनके रहस्य का उद्घाटन अभी तक किसी ने नहीं किया था। कुछ क्षण तक वह एक नवीन और मनोहर भावावेश से अभिभूत-सी खडी रही। स्वभाव से वह धीर थी। वह किसी बात की ओर उछल-कर आगे नहीं बढ सकती थी। वह अपने जीवन के प्रत्येक कम्पन और आचरण में सच्ची थी। ऐसा मालूम होता था कि रिचार्ड के साथ का अतीत जीवन का अब अन्त हो गया और उसका वर्तमान अस्तित्व अतीत से अलग हो पड़ा है।

ज्यों-ज्यों समय बीतता गया कार्ल को यह स्पष्ट हो गया कि प्रतीक्षा करने मे ही उसका कल्याण है। अपना अतीत जीवन जिसकी स्मृति उसके ऊपर एक बाहरी वस्तु की तरह लाद दी गई थी, उससे तग आकर कार्ल की बातों के प्रस्ताव को उसे अस्वीकार कर देना पडा, यद्यपि परिस्थितियों के फेर मे पड़कर उसके प्रति समर्पण की भावना तीव्र होती जाती थी। वह उस मनुष्य की तरह जो एक दुःस्वप्न के कारण हिल-डुल नहीं सकता, सज्ञाशून्य हो गई।

कार्ल ने बारबार रिचार्ड होने का दावा करके अतीत की स्मृति में ऐसी सजीवता प्रदान कर दी थी जो बाल्य-काल के स्मृतियों का सहारा पा और भी तीव्र हो उठी थी, परन्तु उस

४

अन्ना की सखी मेरी अपनी वहन के साथ छत के चौथे छज्जे पर एक कमरे में रहती थी जहाँ से तीनों कोर्टपार्डों मे से दूसरा दिखलाई पड़ता था। कमरा उतना ही बडा था जितना कि उसमें एक छोटी लोहे की चौकी रखी थी जिसने खिडकी और दीवाल के बीच सारी जगह को घेर लिया था।

खिड़की के पास कमरा जरा चौडा हो गया था। एक लोहे का पटरा था जिसमे तीन पैर थे और एक कुल्ला वगैरह करने का बरतन रखा था। कुर्सी और मेज रखने की जगह नहीं थी। जब मेरी को मुँह धोना होता था तव वह चौकी पर ही झुककर अपने मुँह को बरतन मे डुबो देती थी।

रविवार के दिन प्रात अन्ना अपनी चौकी के नीचे की ओर बैठी थी और नगी मेरी कपडे पहन कर वाहर टहलने जाने के लिए तैयारी कर रही थी।

पास ही दूसरे कमरे मे मेरी की बहन जिसका पति युद्ध में गया था—के साथ रहनेवाला आदमी एक धूल-धूसरित स्थान में निद्रामग्न पडा था। उसकी बहन के दो अष्टवर्षीय और नववर्षीय बच्चे एक शिशु-शकट के सामने जिसमे एक नवजात शिशु अपने कपोलों पर हाथ रखकर पड़ा था, ध्यान-मग्न खडे थे। यह नवजात शिशु उसका भाई था जो इस सोये हुए मनुष्य से उत्पन्न हुआ था। वे दोनों आपस मे इस बात पर विचार कर रहे थे कि दिन ढलने पर सध्या समय ठेले-गाडीवाला खेल कैसे खेलने को मिले।

उनमे बडे ने कहा, 'हम लोग पेचकश से निकाल लेंगे तब उसको हम लोग काम में ला सकते हैं।'

'परन्तु यह काम धीरे-धीरे करो नहीं तो यह चिल्लाने लगेगा।'

उन लोगों ने आठ पेच निकाल डाले और ऊपरी हिस्से को जिसमे शिशु था, उठाकर सतह पर रख दिया और सब सामान लेकर धीरे से निकल भागे। 'हम लोग रात को फिर सब चीज जगह पर रख देंगे . देखो, उसने चिल्लाना शुरू किया।'

वह आदमी जो मोटर का काम जानता था, उठा और तुरन्त शिशु-शकट की ओर दृष्टि दौडाई। जहाँ पर वह था वह स्थल खाली था पर तो भी बालक कमरे मे रो रहा था। उसने आँखें मलीं और घबडाया-सा अपने पुत्र की ओर नीचे एक-टक देखने लगा। कुछ क्षण बाद वह हँसते हुए उसे गोद मे लेकर ऊपर-नीचे टहलाने लगा।

यह बालक यों ही परिस्थितियों की उपजमात्र था। उस आदमी ने सोने के लिए युद्ध-प्रवासी पति की जगह को भाडे

पर ले रखा था। पहले दो बिस्तरों के बीच सीमा-चिह्न के रूप मे एक टेबुल था, प्रथम सप्ताह जब वे सोते थे रोशनी बुझा दी जाती थी, क्योंकि एक सस्ते होटल के पक्के-कच्चे भोजन में जो पैसे लगते उसमे वह नारी अपने पूरे असहाय परिवार का भरण-पोषण करती थी। दो बिस्तरे अब आमने-सामने लग गये।

वह नारी सामने ड्योढी मे दिखलाई पड़ी। उसका अंचल बरतन साफ करने के कारण तर था और उसके हाथ मे झाडन था। 'वह रो रहा है क्या ?' उसका मुख भूरा और त्वचा कोमल थी, पर अधरों मे खून की लाली थी और खुले रहने के कारण उसकी बडी-बड़ी प्रश्न-सूचक आँखों से मानो बराबरी कर रहे थे।

आदमी ने कहा 'यह देखो।' उसका चेहरा चमक रहा था और वह गाडी की तरफ इशारा कर रहा था।

'कल रात को सोने के समय वे दोनों बदमाश छोकरे यही सलाह कर रहे थे।' उसने अपने स्तन बच्चे के मुख मे दे दिये। वे स्तन उजले और छोटे थे। उनमे यौवन था और उनमें नीली धमनियों की रेखाएँ थीं।

वह मोटर का कारीगर अपनी पतलून की पाकेट मे हाथ डाले हुए अपने पुत्र के स्तन-पान को ध्यान-पूर्वक देखने लगा।

थोडे ही दिनों के अन्दर पति छुट्टी मे घर पर आनेवाला था। पास ही का कमरा मेरी की हँसी से गूँज उठा। वह अभी तक अपने बिस्तरे पर खड़ी होकर अन्ना के कथनानुसार कुर्ती (Chemise) पहन कर देख रही थी जिसे उसने भोर ही में तैयार किया था।

खड़ी-खड़ी उसने अपने मोजे को ऊपर खींचा। उसके पैर नीचे से लेकर घुटने तक पतले और सुन्दर थे जैसे नारियों के होने चाहिये। फीते के दाग के ऊपर उस नारी की देह का वास्तविक रूप प्रारम्भ होता था। वहाँ से उसके शरीरगठन का आरोह-अवरोह दर्शनीय था। त्वचा का रग थोड़ा उड़ा-सा था और वह कहीं-कहीं खुरदुरी हो गई थी।

उसके निकर (Knicker) की पेटी उसकी कमर में सट-सी गई थी और उसके ऊपर पतली, कोमल और बच्चे की तरह चिकनी पीठ बड़ी सुन्दर प्रतीत होती थी।

अन्ना ने उसके हाथ मे एक सूती फ्राक दिया जिसमे कहीं-कहीं नीली छींटें थीं। यद्यपि उसका सर और भुजाएँ फ्राक के अन्दर घुस गयी थीं परन्तु वह इस मकान में जो कुछ हुआ था, कहती ही गई।

पहले तो नन्ही-नन्ही अँगुलियाँ और उनकी चमकती नखावलियाँ दिखलाई पड़ीं। तत्पश्चात् उसका सुगठित छोटा सिर, उसका सुन्दर मुख, चमकती आँखें दिखलाई पड़ीं। भौंहे और पपनियाँ उसके घने सुवासित केश-कलाप से अधिक काली थीं। उसके गालों मे गड्ढे थे जो मुख के सौंदर्य की अन्तर्प्रेरणा पर उगते और विलीन होते बड़े ही चित्ताकर्षक प्रतीत होते थे।

वह उमग की तरग मे आकर पीछे की तरफ मुड़ी और उसने अन्ना की गोद में अपना सर रख दिया। अन्ना ने उस किशोरी के ज्योतिर्मय गालों पर हाथ रख दिया।

नीचे के बासे से किसी के क्रोधावेश में और जोर से गुर्राने की आवाज सुनाई पड़ी। आवाज दीवालों से लड़खड़ाकर, तग आगन मे लड़खड़ाती हुई, खिड़कियों से होकर आकाश

की ओर उठी जा रही थी। थोड़ी ही देर बाद एक नारी की तीक्ष्ण क्रन्दन की ध्वनि सुन पड़ी।

'वह उसे फिर पीट रहा है।' मेरी उठ खड़ी हुई। 'वे प्रति दिन झगड़ा करते हैं पर फिर भी एक दूसरे से अलग नहीं होते।'

वह औरत जो मार खा रही थी, अपने पति के युद्ध-प्रवास में दूसरे आदमी के साथ रह रही थी। बहुत-सी औरतें ऐसा करती थीं। किसी की बात छिपी नहीं थी। उस बासे मे दु ख, घृणा, रोग, पाप और विपत्ति तथा प्यार के जो दृश्य होते थे उन पर मेरी घटों बातें करती थीं।

अन्ना ने सोचा मेरी भी हालत वैसी ही है। औरतें दूसरा मर्द कर लेती हैं क्योंकि उनका पति नहीं रहता है या छोड़ देता है। यह रोजमर्रे की बात है।

दूसरी छत पर कार्ल खिड़की बन्द कर चुपचाप उस बन्दी की तरह खड़ा था जो प्रतीक्षा करने की शिक्षा पा रहा हो।

दूसरे कमरे मे मोटर-मिस्त्री ने कहा—'जब तुम्हारा पति घर लौटकर इन सब बातों को देखे और सब चीज़ों को तोड़ताड़ दे तब ?'

आँगन की एक तरफ एक झुण्ड एकत्र हो गया था जिसमें अर्द्धनग्न, पीले और यक्ष्माग्रस्त बालक थे, फटे-चिथड़े पहनी स्त्रियाँ, कमीज की बाँह चढ़ाये, फीके चेहरेवाले आदमी थे। भूख और दुर्बलता से पीड़ित एक वृद्ध मनुष्य को उन लोगों ने खुली हवा मे ला रखा था क्योंकि उसे दुर्बलता के मारे मूर्छा आ गई थी।

आँगन के बीच में एक मजबूत मजदूर तीरन्दाज़ की तरह

खड़ा था। उसने अपने शरीर को पीछे की ओर समकोण की सीध मे फेंक दिया था। उसने लोहे के पॉच फीट लम्बे धनुष की प्रत्यचा को पूरी शक्ति के साथ खींचा कि वह अर्द्धवृत्ताकार हो गया। छड़ी की तरह पतला नीकल का तीर स्वच्छ उन्मुक्त आकाश की ओर सन्न से उड़ गया और फिर धीरे-धीरे उस उदास ऑगन में गिर पडा। एक खतरनाक तीर यदि मजबूत परन्तु अनाडी के हाथ मे पड़े तो वह गिरते समय उस फेंकने-वाले को भी घायल कर सकता है।

वह बार-बार तीर फेंकता ही गया। सब लोग एक कमरे मे सिमट कर ऊपर देखते रहे। वह भूख का मारा वृद्ध मनुष्य भी देखता रहा।

घटी को आवाज सुन एलफी खिडकी के पास आई 'अन्ना के यहाँ एक अतिथि आया है। वह नीचे खड़ा है। . भोजन अच्छा था न ?'

'हॉ, गाजर।'

'अहा, गाजर।'

तुरन्त ही दोनो रग-विरगे वस्त्र पहनकर हाथ मे हाथ मिलाये सडक पर घूमते नजर आये जहॉ हफ्तों पहले कार्ल धीरे-धीरे टहला करता था। दोनो के पैर लम्बे और छड़ी की तरह पतले थे और केश-कलाप मे हरे फीते शोभायमान हो रहे थे दो जल-पक्षियों की तरह।

मेरी ने भी नीचे की ओर देखा। कार्ल अभी भी खिड़की के पास चुपचाप खडा था 'बताओ तो, वह तुम्हारा अतिथि.. कौन है ?'

अन्ना के मौनावलम्बन ने मानो सब बातें स्वीकार कर लीं।

वह गंभीर परन्तु अन्दर से आन्दोलित-सी थी। इसी अवस्था में वह कमरे से बाहर हो गई।

जब वह नीचे आई तब वहाँ एक आदमी था और वह केवल साधारण परिचित मात्र ही नहीं था। ऐसी प्रभात-वेला मे कुछ ऐसी प्रेरणा होती है कि यदि दो आदमी मिलते हैं तो आपस में मिलकर एक हो जाते हैं। जब वह अन्दर गई तो उस समय भी आदमी मौजूद था और यह बुरा नहीं था। कमरा जो पहले एकदम सूना-सूना सा रहता था वैसा तो नहीं रहेगा न उसका पति अभी जीवित है क्या? यह आदमी उसके पति होने का दावा करता है और सो भी कुछ ऐसे रूप में कि विश्वास करना ही पडता है। वह उसकी इस मूर्खता-पूर्ण आदत को अवश्य छुडा देगी। वह उसे इस तरह बुद्धू बनावेगी कि यह आदत उसे छोडनी ही पडेगी।

परन्तु मान लो, उसका पति अभी जीवित था। तब? यदि वह जीवित हो तब क्या हो तब तो सारी बातें असंभव हों। अपने पति को छोड दूसरे आदमी के पास जाना हँसी-खेल तो था नहीं। यह साधारण-सी बात तो थी नहीं। वह उसकी आँखों का सामना कैसे करती? उसके प्रलम्ब बाहु और उसके अखण्ड विश्वास के सामने कैसे टिकती? वह उसकी शरण में एकदम सुरक्षित थी—हाँ, एकदम।

'यदि चाहो तो हम लोग जरा टहल आवें।'

'अच्छा' कहकर कार्ल अपने कपडों की ओर देखने लगा।

'यदि चाहो, तो मेरे पति का उजला कालर पहन सकते हो।'

'मैं कोई चीज नहीं चाहता। एक भी नहीं।'

'केवल मुझे। वह उसकी कोई नहीं लेगा सिवा मुझे। 'तम

कहते हो कि वह जीवित है फिर भी तुम मुझे अपनी पत्नी बनाना चाहते हो।'

उसने कहा—'मुझे इससे क्या ?' और तुरन्त ही उसने बिना तक़ल्लुफ़ के कहा मानो वह अन्ना की अनुपस्थिति में इस विषय पर सोच रहा हो और मन से यह कहना पक्का कर लिया हो 'बेचने-वाले को जिसने हमें उन पर्दों के खरीदने की सिफारिश की बड़ी-छोटी और काली मूछें थीं और उसके चेहरे पर दो मुहासे थे। मैंने उस समय तुम्हें दिखला दिया था।'

वह एक असहनशील क्रोध की लहर से उद्विग्न हो उठी, 'मालूम नहीं, तुम्हें किस तरह ये सब बातें मालूम हो गईं। मैं तुमसे सख्त नाराज़ हूँ। यह घृणोत्पादक है। तुम जो कुछ करते हो घृणास्पद है।'

वह अपनी असहायावस्था के कारण पस्तहिम्मत हो गई और उसकी भावनाएँ उस मनुष्य की जैसी होने लगीं जो मन में यह सोचता हो कि 'उसके साथ बड़ा अन्याय हुआ हो।

रविवार की सन्ध्या के टहलने की शुष्कता से क्लान्त मनुष्यों ने जब इन दोनो को देखा तो जीवन के स्पर्श से एक क्षण के लिए चमक उठे। अन्ना इतनी नम्र और इतनी सशक्त, चलने के समय उसके नितम्ब कितने सुन्दर मालूम पड़ते थे और उसके बगल में एक साँवले रंग का आदमी था जिसके बालों में कंघी नहीं हुई थी, जिसके पास कालर नहीं था और जिसका शरीर एक तरह सूखा-सा होकर भी जलते हुए अंगारे की तरह जल रहा था।

वे दोनो नगर की ओर जा रहे थे। यह प्रथम अवसर था कि दोनो एक साथ टहलने के लिए निकले थे। वह आदमी

जो तीन महीनों तक जगलों, पहाड़ों और अनेक सीमाओं को पैदल पारकर इधर-उधर मारा-मारा फिरता रहा हो, उसके लिए यह कितना वरदान था ? आज वह उसके बगल टहल रहा था।

वह दो-एक पग पीछे हट गया जिसमे वह देख सके कि वह किस तरह से चलती है और वन्य-खण्ड मे पडा-पडा उसने जिस मूर्ति की कल्पना की थी वह उसके सामने साक्षात् हो गई। वह अपने चुस्त-दुरुस्त वस्त्राभरण मे ऐसी प्रतीत होती थी मानो एक मृत प्रेमिका सूक्ष्मरूप मे अपने परिचित मार्ग से होकर अपने प्रेमी से मिलने के लिए धीरे-धीरे अग्रसर हो रही हो। वह भावावेश के प्रबल आघात से पीला पड गया।

उसने मन में सोचा—'मैं आवश्यक हो तो वर्षों तक प्रतीक्षा करूँगा।' पर वास्तव मे एक क्षण की प्रतीक्षा उसके लिए असह्य हो रही थी।

उसके मुख पर एक अजीब आभा बिखर रही थी और उसकी दृष्टि एक आन्तरिक गौरव से प्रदीप्त हो रही थी और जब वह मुडी तो अपने को भी कार्ल ही की तरह भाव-दशा मे अभिभूत पाया · 'क्या यह सम्भव है ?'

कार्ल ने उसका अर्थ समझ लिया, क्योंकि उसकी इच्छा और भाव उसी बिन्दु के चारों ओर चक्कर काट रहे थे। 'हाँ, यह संभव है।'

'—कि मैं, पहले मैं तुम्हारे साथ था ?'

वे वृक्षों की कतार में प्रविष्ट हुए जो बाहरी प्रदेश को नगर से सम्बद्ध करते थे। 'एक बार पहले भी तुम यहाँ आई थीं, सन्ध्या का समय था और तुम मेरे लिए प्रतीक्षा कर रही थीं।'

रिचार्ड ने उसे कभी यह कहा नहीं था, परन्तु वह जानता

था कि यह बात सच्ची है। उसने अन्ना को वहाँ टहलते और प्रतीक्षा करते हुए देखा था—यह सत्य उसके अन्दर वर्तमान था और उसने उसे कह डाला।

अपने बायें पार्श्व में अन्ना एक विचित्र उष्णता के भाव की अनुभूति से स्पन्दित हो उठी। वास्तविकता अपनी सारी बाधाओं के साथ गायब हो गई। अन्तर्तम की निगूढ भावनायें जाग उठीं। उन दोनो के हृदय की धड़कन साथ-साथ बोलने लगी।

अन्ना सोच नहीं सकी। उसने अपनी भावनाओं पर विश्वास कर लिया और अपने भावों के सच्चे रसास्वादन के लिए उन्हें मुखर करना अर्थात् नाम लेना आवश्यक था। वह बोल उठी . 'रिचार्ड !'

कार्ल ने अपने ऐन्द्रजालिक आलिंगन-पाश को बन्द करते हुए कहा 'मैं तुम्हें प्यार करता हूँ' और वे आगे बढे।

'और यह बच्चा ? क्या तुम इसे चाहती हो ? क्या तुम्हारी इच्छा है ?'

उसके अधर खुले, उसकी आँखें झुकीं। तिसपर भी वह शात प्रकृति की नारी थी।

उसने उसके अधरों पर अधर रखे ही कुछ पूछा। उसके मूक उत्तर की सुखमय पीड़ा के मधुमय भार से आक्रान्त वह अपनी स्त्री के साथ कुञ्ज में प्रविष्ट हुआ।

बाल्यकाल में क्या वह एक बार पहले भी वहाँ नहीं आया था ? और जमीन के मालिक की लडकी, हाँ अन्ना ने, उसकी गर्दन में हाथ डालकर बड़े प्रेम से दूध से भरा कटोरा उसके आगे नहीं बढ़ा दिया था ?

वाटिका के एक सूने कोने मे वे एक दूसरे से सटकर इस तरह से बैठे हुए थे मानो रिचार्ड और अन्ना से किसी तरह का सम्बन्ध नहीं रहा हो, मानो दो हृदयों की प्रबल वेगवती इच्छा-शक्ति ने अवसर की प्रबलता को जिसके द्वारा मनुष्य के भाग्य का निर्माण होता है, चूर-चूर कर दिया हो। उन दोनो के हृदय के धड़कन यों बोल रहे थे मानो आरम्भ से ही उन्हें इसी तरह रहने की आदत हो।

बगल ही मे एक दूसरे मजदूर का परिवार आया। अन्ना के बैठने के पहले ही नारी ने जल्दी से सैण्डविचेस् की पोटली खोली और उसके चारों बच्चे जिनकी लम्बाई मेज की जितनी ही थी, उस तरह चिल्लाने लगे जिस तरह पक्षी के छोटे भूखे बच्चे अपनी मा को घोंसले की तरफ आते देखकर चिल्लाते हैं। बाहरी ससार भी स्फूर्ति-मय हो उठा।

अन्ना फिर चिन्तामग्न हो गई। वह भाग्य जो हजारों मे एक को नसीब होता है, उसके बाँटे पडा था: वह प्यार करती थी। वह उस समय उस अगम्य प्रेरणा के वशीभूत थी जो बाहरी परिस्थिति तथा अपने-प्रेम पात्र की बाहरी आकृति, उसके रूप और गुण को कुछ भी परवाह नहीं करती ' जो है भी और नहीं भी है, जो सीसे से भी भारी और गन्ध से भी सूक्ष्म है; जो अणु से भी छोटा और पृथ्वी से भी बड़ा है और जो मनुष्य को सुख के स्वर्ग में पहुँचा देता है या विपत्ति जैसे गह्वर में इस तरह पटकता है कि वह एक चूहे के जीवन से भी ईर्ष्या करने लगता है। उसका हृदय एक ऐसा रहस्य बना हुआ था जिसकी वह थाह नहीं पा रही थी।

आठ बजे बाजे बजने लगे। वाटिका भर गई। दर्शक गण

ठीक समय से आ गये थे। कार्ल ने अपने चारों ओर बैठे हुए मनुष्यों के दृष्टि-निक्षेप को देखा, परन्तु अन्ना और उसका सम्बन्ध पारस्परिक सहानुभूति की अवस्था तक पहुँच गया था। कार्ल प्रारम्भिक अवस्था को पार कर चुका था। उस अवस्था को भी जब मनुष्य अपनी प्रेमिका के साथ में प्रदर्शन करने मे गौरव का अनुभव करता है। बाह्य ससार का कोई भी रूप अब उन दोनों को प्रभावित नहीं कर सकता था। जीवन की सारी चहल-पहल से परिवेष्टित वे एक दूसरे के विरुद्ध, पर साथ साथ एक दूसरे के लिए सघर्ष मे भी प्रवृत्त थे जिसमे चोट तो लगती थी परन्तु दूसरे ही क्षण आँखों की चितवन से भर भी जाती थी।

एक आदमी जो वृद्धता के कारण एकदम झुक गया था, इस मेज से उस मेज की ओर रग-बिरगे लाल-नीले-पीले बैलून को लिये घूम रहा था। वे उसी रास्ते से लौटे जहाँ उन्हें अभी ये सब विचित्र अनुभव हुए थे। वे धीरे-धीरे मौन होकर टहल रहे थे—वे जो एक दूसरे के अपने हो गये थे।

अन्ना ने इसका विरोध किया। वह इसके लिए तैयार नहीं थी और बातों का कोई स्पष्ट रूप भी तो अभी सामने नहीं आया था। यह अस्पष्टता उस के लिए असह्य थी, परन्तु वह एकाएक भावों के ऐसे प्रबल और अप्रतिहत प्रवाह मे आ गई जिसके कारण उसे क्षणिक रूप में ही सही, परन्तु अपने पूरे भाव के साथ अतीत जीवन को विस्मृत कर देना पड़ा और कार्ल की प्रत्येक बातों पर विश्वास करना पडा।

जब वे सदर दरवाजे से जा रहे थे दो बालिकाएँ फुस-फुस आपस मे बातें कर रहीं थीं। उनके मुँह और हाथ धूप से जल

से गये थे। आज एल्फी पीला वस्त्र पहने हुई थी और अल्या नीला। उन्होंने झील के किनारे फ्राक को बदल लिया था।

'तुम बड़ी भाग्यवान हो अन्ना! मैं तुम्हें साधुवाद देता हूँ' ऐसा कहता हुआ एक आदमी उपर से नीचे सीढ़ियों की ओर उतरा। 'ऐसा कभी-कभी हो जाता कि वह मनुष्य जिसकी मृत्यु की खबर उड़ चुकी हो, लौट आता है; पर बहुत कम।'

एल्फी ने जोर से कहा 'हमने कल रात ही सुना।'

'किससे?' उस आदमी ने पूछा। वह दूसरे छत पर आ गया था। अन्ना ने उत्तर सुना 'वौश से।'

वह एक वृद्धा औरत थी जिसे उस वासे की प्रत्येक घटना की रत्ती-रत्ती बात मालूम थी और जो कोई भी सुननेवाला मिल जाय उससे कहती-फिरती थी।

अब क्या हो? अन्ना ने सोचा। अचानक वह अपनी सखि की गोद में थी और मेरी के गालों पर आँसुओं की रेखा देखी। 'तुमने इसके बारे में मुझसे क्यों नहीं कहा? मेरे सिवा सारा वासा इसे जानता था। बात छिपाने में तो तुम एक ही निकलीं। मैं उन्हें देखना चाहती हूँ रिचार्ड! मैं तुम्हें अवश्य देखूँगी।' सीढ़ियों पर एकदम अँधेरा था।

'अब, अब क्या हो?'

'मैं कितना खुश हूँ!'

अन्ना भी खुश थी। उसने सोचा आनन्द की मधुमय पीड़ा कितनी मीठी है! इस भार से दबी वह दरवाजे के समीप गई, खोला और लैम्प जलाया।

वह कह सकती थी कि कार्ल उसका पति नहीं, आशिक था। इसमें ऐसी कोई गुप्त रखने की बात नहीं। उस वासे में रहने-

वाली औरतों के लिए, खासकर जिनके पति युद्ध में गये हों, प्रकट रूप से दूसरे पुरुष से सम्बन्ध रखना रोजमर्रा की बात थी।

और वह, बिना असत्य-कथन के और दोषारोपण के, यह भी कह सकती थी कि कार्ल उसका पति है। उन आठ दिनों मे अर्थात् नगर प्रवेश और युद्धारम्भ के बीच में रिचार्ड ने किसी से परिचय प्राप्त नहीं किया था, अपने पडोसियों से बात भी नहीं की थी। और तब से आज चार वर्ष बीत गये।

यद्यपि ये अन्तर्द्वन्द के भाव यदाकदा उसके मस्तिष्क पर आ जाया करते थे पर अन्तिम निर्णय इनके हाथ में नहीं था। अन्तिम निर्णय तो अन्ना की एक मात्र इच्छा और अभी-अभी कार्ल के साथ जो अनुभूति हुई, उस पर था।

वह रिचार्ड था या नहीं, यह प्रश्न अब महत्व का नहीं रहा। वह जानती थी वह झूठ नहीं कह रहा है। उसके अपने भाव या अनुभूतियाँ झूठी नहीं। यह वास्तविक सुख था। यदि नियति की यही इच्छा है तो सब लोग उसको उसका पति समझें। और वह ? उसकी इच्छा नहीं थी क्या ?

वह वहाँ खडी रही और गम्भीर भाव से उसने मेरी की ओर हाथ बढाया। उसका मुख-मण्डल चमक रहा था। उसकी भी इच्छा थी! हाँ, उसकी भी इच्छा थी! वह विचित्र आदमी खिड़की के पास वृक्ष की तरह खड़ा था। वह भी खुश था और अकेला नहीं था; अब ..अब अकेला नहीं। यह कैसी सुन्दर बात थी! कितनी, कितनी सुन्दर! मेरी का दमकता हुआ मुख! वह आनन्द के मारे हँस भी रही थी और रो भी रही थी! सब कुछ होने पर भी जीवन सुन्दर है।

दुपहरी मे सिवा इक्के-दुक्के झगड़ों के आँगन में शान्ति

विराज रही थी। विचित्र तरह की ध्वनियाँ सुनाई पड़ने लगीं। उस बासे के दो गवैये अपने हाथ के बने बाजों के सुर और ताल ठीककर रहे थे , एक प्यानो और दूसरा सितार।

एक ने प्यानो को बेंच पर, इस सावधानी से रखा कि वह गिरकर टूट न जाय और दूसरा अपनी गर्दन से सितार लगा कर ठीक करने लगा। सगीत भी आरम्भ हो गया।

उस मजदूर के मोटे हाथ और प्यानोवाले की मोटी अँगु- लियों के लिए उस वाद्ययन्त्र पर काफी स्थान नहीं था। उन दोनों गायकों को अपनी स्वाभाविक-शक्ति पर नियन्त्रण रखना पड़ता था ताकि बजाने के समय वे यत्र चूर-चूर न हो जायँ। अतएव उनके बजाने से सुन्दर सगीत की सृष्टि हो रही थी। बासे के सैकड़ों आदमी ध्यान देकर सुन रहे थे। एकदम शान्ति थी, बच्चे भी चुप थे। अन्ना के कमरे मे तीनों मित्र भी सुन रहे थे ध्वनि बडी मीठी थी।

जब उन्होंने समाप्त किया, एक चार वर्ष का सुन्दर बालक गा उठा। वह अपने को रोक न सका 'मीरेशान का एक लडका हुआ...' सगीतमय वह हो उठा था। आकाश की ओर देखकर अपनी पूरी ताकत से गाने लगा। आवेश में वह हाथ-पैर उछालने लगा, 'वह अपने पिता को नहीं जानता।'

५

पडोसियों ने परिस्थिति और भी सुलझा दी। वह, उनकी नजरों में, अन्ना का पति था। बच्चे भी उसको 'हर रिचार्ड' ही कहते। बनिया, रोटीवाला और मांसवाला सब उसे उसके मृत पति के लौट आने पर बधाई देते। पास मे रहनेवाला आदमी रोज सुबह-शाम उसे 'हर रिचार्ड' कहकर अभिवादन करता। मेरी तो उससे प्रेम करने लगी थी। हाँ, अधिक नहीं। उसके लिए केवल 'रिचार्ड' कहने की इजाजत थी। अन्ना स्वय 'रिचार्ड' कहती। वह केवल नामोच्चारण मात्र ही नहीं करती, यह धीरे-धीरे रोजमर्रा की बात हो गई, उसकी भावनाओं का अग-सा हो गया।

उसे अब कारखाने में जाने की आवश्यकता नहीं थी। उसका पति काम पा गया था। प्रति शनिवार को वह अब सप्ताह भर की कमाई पाई-पाई उसे दे देता, तब अपनी पेटी ठीक

करता हुआ बालक की तरह हाथ बढ़ाता और वह उसे पाकेट-खर्च के लिए कुछ दे देती।

अन्ना की खाट दो मनुष्यों के लिए काफी चौड़ी थी। वह दीवाल के पास सोता। वह भोर मे धीरे से उठ कर जलपान तैयार करती मानो यह पहले से ही उसकी आदत हो।

वह अपनी अनुक्त प्रतिज्ञा का निर्वाह करती गई। यह उसका तीसरा महीना था।

वह उसे कोई वस्तु ढोने या उठाने नहीं देता। काम के बाद वह दौड़ा आता; लकड़ी, कोयला और आलू लाता और जमीन भी बुहार डालता।

दुनिया मे ऐसे मनुष्य होते हैं जो तब तक अच्छे बने रहते हैं जब तक सारी बातें उनके अनुकूल होती रहती हैं और ऐसी नारियाँ भी होती हैं जिन पर प्रणयावस्था में एक अनिर्वचनीय शोभा छा जाती है और उनकी आँखें और मुखमण्डल ऐसी ज्योति से उद्भासित हो उठते हैं कि किसी भी राहगीर से यह बात छिपी नहीं रहती।

दिन भर में सैकड़ों अवसर आते जब वह आनन्द-विभोर हो उठती—जब अपने आदमी को देखती, उसके बारे में सोचती, जब उसे उसकी कोई कही बात या उसके दृष्टि निक्षेप की बात की स्मृति हो आती, या जब यह खयाल हो आता कि वह अपने गर्भ में उसके तेज को धारण कर रही है।

उसके प्रेम में वासना थी, पर साथ ही साथ अन्ना के प्रति उसके कोमल और रक्षा के भाव थे जैसे माता के होते हैं। घर, बाहर, कारखाने मे और 'यत्र तत्र सर्वत्र' वह अन्ना-अन्ना ही

देखता। अन्ना उसका प्राण थी। उसके खून की एक-एक बूँद में अन्ना थी। वह अन्नामय हो रहा था। वह उसे प्यार जो करती थी।

सन्ध्या समय एक आविष्कार के काम में समय देता। इसकी परीक्षा हो चुकी थी और इससे उसे सौ मार्क्स मिले थे। वे एक शिशु के उत्पन्न होने की आशा कर रहे थे।

एक दिन सध्या को वह घर लौट रहा था। यह विचार कि वह अन्ना को अवश्य देखेगा, उसके अन्दर एक स्वच्छ स्फटिक झील की तरह चमक रहा था। इसी चेतना से उसका रोम-रोम परिव्याप्त था। यदि वह उसे घर पर नहीं पाता तो भी वह वहाँ रहती। उसका रहना उतना ही निश्चित था जितना कि चूल्हे के पास गिलास, खिड़कियों का हिलते रहना या सिलाई के सजान का रहना।

जब वह आती, वह बैठ जाता। उसकी आँखें उसका पीछा करती रहतीं. उसके ललाट पर पड़ी वालों की लट साँस के एक झोंके से हिल जाती, वह आनन्द मे सराबोर हो जाता। जब वह भोजन तैयार करने के लिए उसके पास से होकर जाने लगती वह अपना सर और कन्धा सहलाने लगता।

'तुम कहाँ थीं अन्ना ?'

जब वह अपने अनुरूप ध्वनि मे उत्तर देती तो मानो आनन्द की देवी ही स्वय कूक उठती 'मैं जूतेवाले के यहाँ जरा गई थी। मैं समझती हूँ वह तुम्हारे जूतों को ठीक कर देगा रिचार्ड।'

यह ध्वनि ऐसी मालूम पड़ती कि मानो वह कह रही हो, 'मैं अपने प्राणों से भी अधिक तुम्हें प्यार करती हूँ।'

वह तो उसे प्राणों से हजार गुना ज्यादा प्यार करता। यहाँ

आने के पूर्व उसका जीवन एक अनवरत अशांति तथा एकान्त की पीड़ा के सिवा कुछ नहीं था।

उन दोनो में और दूसरे हमजोलियों मे एक बात का अन्तर था और इसी के कारण वे उन लोगों से बहुत ऊँचे उठ जाते थे। वह यह था कि वे आनन्द-चेतना की तह तक पहुँच गये थे और इसी कारण से उनमे ऐसी स्निग्धता, और गम्भीरता आ गई थी जिसकी झलक उनकी आँखों में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती थी।

उनकी रात्रि शारीरिक आनन्दोपभोग में व्यतीत होती थी जो प्रेम की आन्तरिक ज्योति के सम्पर्क से और भी उल्लासमयी हो उठती थी। उनके लिए वियोग का प्रश्न ही नहीं था। वे अपने प्रणय मे जीवन के वास्तविक तत्व और पराकाष्ठा को पहुँच जाते थे।

छोटी-छोटी बातों मे स्वर्ग छिपा रहता था। उसके सूती वस्त्र की एक तह ज़रा कमर से खिसक जाती और उसका नितम्ब जो ज़रा धूप के कारण फीका हो गया था, उसकी सीमा की झलक जब दिखलाई पड़ जाती तो कार्ल के लिए मानो प्रेम की अगाधता सब जगह से छनकर वहीं घनीभूत हो जाती। वे ज्यादा बोलते नहीं थे। वे वाचाल प्रकृति के नहीं थे। उनके जीवन के प्रत्येक पग-निक्षेप मे, हृदय की प्रत्येक धड़कन मे, उनके देदीप्यमान मुख मे गाम्भीर्य था। वे मानो किसी आन्तरिक आढ्यता के कारण पूर्ण थे।

अन्ना अपनी सिलाई को एक कोने में रख देती और झट उसके साथ ही साथ कार्ल उठ खड़ा होता। 'चलो हम लोग ज़रा बाहर घुम आवें।' नगर के सारे निवासी, विस्तृत मैदान, वायु, वन सब के सब उनके आनन्द-महोत्सव में हाथ

बटा रहे थे क्योंकि दोनो ने एक दूसरे को प्राप्त कर लिया था।

एक दिन वे लोग रेलवे-लाइन की तरफ जानेवाली सड़क पर टहलने गये थे, दूर पर तार का एक खभा भी सुन्दर प्रतीत हो रहा था। उसके उपरान्त मेरी रोती हुई उनके कमरे में आई। उसकी बहन का पति युद्ध-क्षेत्र से छुट्टी पर आया था, मोटर-मिस्त्री से उत्पन्न लडके को देर तक ध्यान-पूर्वक देखता रहा, अपनी पत्नी की कैफियत को सुनता रहा और उत्तर मे बिना एक शब्द कहे ही दरवाजे के बाहर निकल, दूसरी ही ट्रेन से युद्ध-क्षेत्र मे चला गया।

तीनों लैम्प के नीचे मेज के चारों ओर बैठे थे। मेरी आँसुओं से तर थी। उसने हाथ फैलाया और अन्ना ने अपना रूमाल उसमें रख दिया।

'हम लोगों ने कभी भी विश्वास नहीं किया था कि वह इस बात को इस तरह से लेगा।'

अन्ना ने कार्ल की तरफ देखा और फिर मेरी की ओर। 'हम लोगों को क्या करना चाहिये था ?' उसे ऐसा मालूम हुआ कि कलेजा मुँह को आ रहा है। उसे इसका कारण समझ में नहीं आया 'वह उसकी पत्नी थी।'

जब मोजर का पति आ गया तो फ्रित्स जिसके साथ वह रहती थी, उसे छोडकर चला गया। यही ठीक था। और उस हर हेज्लर ही को देखो ना। तीन सप्ताह हुए कि वह आया, परन्तु वह पोस्ट आफिस में काम करनेवाला उनके साथ ही है और जब तक दूसरा कमरा मिल न जाय वहीं रहेगा। वे तीनों एक ही कमरे मे रहते हैं' मेरी ने कहा। अभी भी उसका रोना बन्द नहीं हुआ था।

'परन्तु हर लेनर्ट ने अपनी स्त्री को मारते-मारते अधमरा ही कर डाला था और अब उसने अपना सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया। तुम मेरी किसी बात को यों ही ले लेती हो।'

'यही हम लोगों के जीवन का क्रम है, इस जीवन-क्रम का दोष भी है अन्ना। वह आयेगा, अवश्य आयेगा और मैं उसकी गर्दन पर चढ़ जाऊँगी, अन्ना, समझी।'

'ऐं, तीनों एक ही साथ एक ही कमरे में रहते हैं?' उसने कार्ल की ओर देखा। कार्ल ने एक शब्द भी नहीं कहा। उसकी आँखें कमरे मे नहीं थीं। अन्ना की समझ मे नहीं आता था कि उसका हृदय इतनी तीव्र गति से धडकने क्यों लगा।

'मैं उसकी गर्दन पकड़कर बैठ जाऊँगी तब वह द्रवित हो जायगा।' उसके आकर्षक मुख-मण्डल पर मुसकान की रेखा दौड गई। गालों में गड्ढे निकल आये। 'रिचार्ड' मैं काफी तैयार करने जा रही हूँ। जाऊँ न अन्ना?'

घटनाओं का प्रभाव मेरी पर शीघ्र और अधिक पडता था। प्राय ऐसा होता कि जहाँ और लोग जरा उत्साहहीन ही रहते वह हँसने लगती या जहाँ दूसरे आनन्दमग्न रहते वह रोने लगती, परन्तु तुरन्त ही वह फिर तरोताजा हो जाती। उसकी दशा उस काग की तरह थी जो लहरों के प्रत्येक थपेडे पर लुढ़कता फिरता, पर भारी से भारी तूफान मे भी डूबता नहीं।

कार्ल की आँखें अभी यूरोप और एशिया के वन्य-प्रान्त की ओर ही लगी थीं। अन्ना ने अपने कठ पर हाथ रखा जहाँ मानो कलेजा आकर जोर से धडधड़ कर रहा था।

खिडकी मे मशीन के पुर्जों को पकड़ रखनेवाला यत्र लगा हुआ था। वह कारखाने में भारी कामों को लेथ के सहारे किया

करता था लेकिन रेतने और पुर्ज़ों को मिलाने का काम वह शाम के वक्त घर पर ही कर लिया करता था। उसकी चीज़ पूरी तैयार हो गई थी। यह आकार मे एक बच्चे की हथेली से भी छोटी थी।

वह जिस प्रकार काम करने के लिए उठ खड़ा हुआ, जिस ढग से अपनी चीज़ों को उसने खिड़की पर सजाया और रेती लेकर काम करने लगा। उससे तो अन्ना ने यही समझा कि मृत्यु के सिवा वह दूसरी चीज़ से परास्त नहीं हो सकता।

एक बार दोनो को रोमाच हो उठा मानो नियति ने अपनी उँगलियों से उन्हें छू लिया हो। वे दोनों रात भर एक दूसरे से लिपट कर सोये—इस तरह मानो भाग्य ने दोनो के हृदयों को एकाकार कर दिया हो और जो उनको जीवन दे सकता था, मृत्यु दे सकता, पर उन्हें अलग करना उसके बूते से बाहर था। उनके हृदय को अपराध की भावना छू तक नहीं रही थी।

उसके आठ दिनों के बाद सैनिक अधिकारियों ने सेरी की बहन को सूचित किया कि उसका पति एक सप्ताह पहले ही युद्ध मे काम आ गया था।

बासे के उन रहनेवालों ने भी जिन्होंने पहले से उसकी नुक्ता-चीनी नहीं की थी, वे भी अब उस पर दोषारोपण करने लगे। उस पर फब्तियाँ कसी जाने लगीं। लोगों का उस पर यह आरोप था कि उसने अपने पति को मृत्यु के मुँह में धकेल दिया है। उसके पास भर्त्सनापूर्ण पत्र आने लगे। अब वह मोटर-मिस्त्री भी दोषी की तरह लोगों की नजर बचाता, सुबह-शाम आया-जाया करता था। अपने कमरे मे भी वे जरूरत पड़ने पर ही बोलते थे। वह नारी अपना काम करती ही जाती थी। ऐसी

दुखद घटना के बाद जीवन-प्रवाह को पूर्व रूप मे आने में कुछ सप्ताह लग ही जाते हैं।

कुछ दिनों के बाद ही पड़ोसियों से अभिवादन का आदान-प्रदान आरम्भ हो गया और मेरी की बहन को भी कटूक्तियाँ नहीं सुननी पड़ती थीं। कपड़ा साफ करने के घर में अब वह फिर से स्वतन्त्रतापूर्वक आने-जाने लगी थी।

लेकिन उसके दोनों बच्चों और पडोसियों के लड़कों का झगडा और कुछ दिनों तक बना ही रहा। दिनभर मे कई बार अपनी माता के चरित्र को लेकर उनकी लड़ाई हुआ करती थी। पडो-सियों के लड़के अकसर अँगुली उठाकर कह बैठते थे 'तुम्हारी मा खराब औरत है!'

× × ×

अन्ना दराज को खोले खडी थी। अब तक वह सोफा पर लेटी ही हुई थी। लेकिन वह सहसा उठ खड़ी हुई और दराज के पास जाकर उसमे यों ही कुछ ढूँढ़ना शुरू किया।

लेकिन जब उसके हाथ में वह पुराना पोस्टकार्ड आ पडा जिसमे आज से चार वर्ष पहले सैनिक अधिकारियों ने उसे उसके पति की मृत्यु की सूचना दी थी तो उसके कलेजे से जैसे बर्छी आर-पार हो गई। वह यन्त्रचालित-सी पढ़ने लगी।

लेकिन वह अब किसी क्षण आता ही होगा, वह सोचने लगी और उसे बहुत शान्ति मिली। 'मेरा खयाल है कि मेरे अविवाहित जीवन के विषय में सब कुछ जानते हो, जब मैं एक छोटी-सी बालिका थी तब की बातें?'

निस्सन्देह उसे यह अच्छी तरह मालूम था कि ये बातें उससे कब कही थीं हाँ, वह सब कुछ जानता था। उसके

बारे मे, दुनियाँ मे, उस पुरुष से अधिक कोई नहीं जानता था। वह स्वय भी नहीं जानती थी। और यह केवल इसी कारण कि वह उसे इतना प्यार करता था। वह केवल उसी को चाहती थी—सदा के लिए केवल उसी को। इसके अतिरिक्त और कुछ सम्भव हो ही नहीं सकता था। सोचा तक नहीं जा सकता था।

बहुत दिन हुए, धूमिल अतीत मे इसके सिवा भी कुछ जरूर रहा था। 'चौथे सितम्बर १६१४ को लडते हुए युद्ध में मारा गया।' और यही उस बात की एक स्मृति रह गई थी—इस पोस्टकार्ड के रूप में। क्या यह सच है? लेकिन कार्ल ने तो कहा था कि सेनाधिकारियों ने यह गलत सूचना दी थी उन लोगों से भला क्या गलती हो गई? किस विषय मे? क्या उसके पति के बारे मे? या और ही कोई बात थी?

वह अचानक ऐसी मानसिक क्लांति का अनुभव करने लगी कि उसे सोफा तक पहुँचने के लिए कुर्सी का सहारा लेना पडा। सोफा पर लेटते ही वह गम्भीर निद्रा मे मग्न हो गई। अब छ बजने को आये और फिर सात भी, लेकिन उसकी गम्भीर स्वप्नरहित निद्रा भग्न नहीं हुई। उसकी चेतना तथा अग सब शिथिल हो रहे थे। डाकिये ने बाहर दरवाजे मे लगी पीतल की घन्टी धीरे से बजाई और एक चीठ्ठी भीतर गिरा दी।

उस क्षण के सहवास मे उसके मस्तिष्क मे एक स्वप्न का आविर्भाव हुआ जिसने उसकी शान्ति को उस तरह आक्रान्त कर लिया जैसे प्रकृति की नीरवता को वज्र का प्रथम निर्घोष। वह डर कर उठ खडी हुई और दरवाजे के पास चली गई। फर्श पर रिचार्ड का भेजा हुआ पत्र पडा था। वह उस पत्र को

उठा नहीं सकती थी क्योंकि वह लोहे के मजबूत तारों से फर्श पर जकड़ा हुआ था।

मैं इसे क्यों कर पढ़ सकूँगी? अच्छा ही है इसे मैं नहीं पढ़ पाऊँगी। लोहे के तारों को उसे खुद ही आकर हटाना पड़ेगा। वह अब किसी क्षण आ सकता है। लेकिन वह यदि इसे पढ़ लेगा तो मेरा सर्वस्व लुट जायगा! इसकी कल्पना भी कितनी भयकर है! मेरा सब कुछ चला जायेगा! सब कुछ!!

वह अंदर जाकर चिमटा उठा लाई और झुककर तारों से तीन काटियाँ उखाड़ीं और इसके बाद और तीन काटियाँ, लेकिन अभी भी चार काटियाँ बाकी थीं। यह बड़ी अच्छी बात है। चिट्ठी को कोई भी खोल नहीं सकेगा। सतोष की साँस लेकर वह फिर लेट गई और सो गई, लेकिन उसकी निद्रा फिर भग हो गई।

हाँ, यह तो स्वप्न मात्र था कि चिट्ठी काटियों से फर्श पर जकड़ी हुई थी। वह तो योंही वहाँ पड़ी हुई है। मैं तो केवल स्वप्न देख रही थी—वहाँ उठकर चली जाऊँ तो चिट्ठी हाथ आ जायेगी। वह दरवाजे तक गई और चिट्ठी को देखा, लेकिन उसी समय रिचार्ड भी उसके सामने आ खड़ा हुआ। रिचार्ड के पीछे मालूम होता था कि एक गगनचुम्बी अदृश्य ज्योति की दीवाल खड़ी हो। 'नहीं, यह केवल शून्यता का भ्रम है' उसके मुँह से निकल पड़ा।

रिचार्ड के धड़ पर सर नहीं था। वह उसे ऐसी आँखों से देख रहा था जिनका कहीं पता नहीं था। वह ऐसी आवाज से बोल रहा था जो सुनाई नहीं पड़ती थी 'मुझे काँटे दे दो।'

उसने रिचार्ड के हाथों मे खानेवाले कॉटे को दे दिया। वह मेज के पास बैठ गया, वैसा ही छलरहित और रोटी को काटने लगा।

यह भी तो एक स्वप्न ही था। मुझ से नहीं सहा जाता। अब मुझे उठना ही पडेगा। उठना ही पडेगा। जरूर उठना पडेगा। अपनी सारी तद्राजड़ित शक्ति का सचयकर उसने रबड की मोटी भीगी जजीरों को तोड डाला और उछल कर चिट्ठी के पास पहुँची। लिफाफे को खोल दिया, पर फिर भी हृदय के किसी अनिर्वचनीय उद्वेग और कष्ट के कारण पढ़ नहीं सकी। वह अभी तक सोफे पर गम्भीर निद्रा मे सोई हुई थी। उसके दोनों हाथ उसके चिबुक से लगे थे। रिचार्ड मेज के पास बैठा हुआ था। उसके धड़ पर सर नहीं था। वह खाना खाते-खाते प्रेम से मुसकराकर उससे कहने लगा 'इससे क्या ? मैं सारी परिस्थिति को अच्छी तरह समझ रहा हूँ। ऐसा होना अनिवार्य था। थोडी देर और सो लो।'

उसने अपार शाति का अनुभव किया। वह स्वप्न देखने लगी कि उसे फिर नीद आ रही है और अपनी नीद मे ही उसे गम्भीर निद्रा-सुख की प्राप्ति हुई। उसका स्वप्न फर्श पर पत्र के गिरते ही भग्न हो गया। क्षण के दशाश पहले डाकिये के घण्टी बजाने के समय ही उस स्वप्न का प्रारम्भ हुआ था, किन्तु उसकी निद्रित चेतना मे यह घण्टों तक चलता रहा।

पत्र देने की आवाज सुनकर उसकी निद्रा तथा स्वप्न दोनो ही टूट गये। उसे सीढियों से नीचे उतरते हुए डाकिये के जूतों की खटखटाहट सुन पड़ी और उसे अविलम्ब यह स्मरण हो

आया कि वह अभी-अभी स्वप्न देख रही थी कि उसके पास रिचार्ड का एक पत्र आया है।

उसके हृदय की धडकन रुक गई। उसने सोचा वह स्वप्न देख रही है और उसने बडी चिन्ता से अपनी गरदन पकडी। फर्श पर पत्र पडा था, लिफाफे पर डच मुहर लगी हुई थी और उस पर पेंसिल के कई तरह के निशान लगे थे। उस पर जाँच की कई मुहरें भी लगी हुई थीं। उसमे से एक प्रकार की गन्ध-सी आ रही थी। लिफाफा खुला हुआ था।

अपने विवाह के पहले उसने एक वार स्वप्न देखा था कि उसके पास उसकी मा ने जो एक आश्रम मे रहा करती थी, एक पत्र लिखा है। उसकी मा ने उसके पास कई वर्षों से पत्र नहीं भेजा था किन्तु उस स्वप्न के वाद जगने पर उसने देखा था कि सचमुच ही उसकी मा की चिट्ठी फर्श पर पडी हुई थी।

पहले तो उसकी इच्छा हुई कि चिट्ठी को बिना पढे ही जला दे। वह चूल्हे के पास डरती-डरती गई भी।

'प्यारी अन्ना, अगर मैं उस जहाज पर रहता तो हम दोनो इस जीवन मे फिर नहीं मिल सकते।

मुझे अब तक यह पता नहीं चल सका है कि मैं अँग्रेजों द्वारा वन्दी वनाया गया हूँ या जापानियों द्वारा। मैं इस वक्त एक जहाज पर हूँ। हमसे जहाज की भट्टियों मे कोयला झोंकने का काम लिया जाता है और हम हरवक्त पसीने में लथपथ रहा करते हैं। साथवाला जहाज कल ही एक सुरग से टकरा गया, केवल दो धडाके सुनाई पडे थे और जहाज का खातमा हो गया था, उसके वाद कुछ दिखाई तक नहीं पडा। हम आज फिर आगे बढ रहे हैं। चारों ओर सुरंग बिछी हुई है। हममें से

कोई नहीं जानता कि हम लोग कहाँ जा रहे हैं। मैं इस पत्र को एक डच को दे दूँगा क्योंकि उसे स्वदेश लौटने की अनुमति मिल गई है। प्यारी अन्ना, यदि तुम्हें कभी यह पत्र मिल जाय तो विश्वास करो कि मैं तुम्हें पूर्ववत् ही प्रेम करता हूँ और तुम्हारे पास जल्दी से जल्दी लौट आने की आशा भी रखता हूँ, लेकिन यहाँ खाने को अच्छी चीजें काफी मिल जाती हैं।'

चिट्ठी तीन महीने पहले की लिखी हुई थी। अन्ना बर्फ की तरह ठंढी हो गई जैसे कभी-कभी मनुष्य आँखों के सामने बिजली के चमकने पर महसूस करता है।

चिट्ठी में से लिफाफे से भी अधिक तीव्र गंध आ रही थी और उसे ऐसा मालूम हुआ जैसे उसके सारे शरीर में गन्दा पानी फैल गया हो। उसने चिट्ठी को फूलों के डब्बे के पास ताख पर रख दिया। चिट्ठी ताख से जरा बाहर निकली हुई थी, उसे उसने बड़ी सावधानी से अँगुलियों के सहारे भीतर कर दिया। गर्भस्थ शिशु पेट में चल रहा था। उसे जल्दी से बाजार जाना पड़ा। रिचार्ड कभी भी टपक पड़ सकता था। क्या तब तक दुकानें खुली रहेंगी ? घर लौटने पर रिचार्ड हर वक्त भूखा रहता था, लेकिन वह चिट्ठी तो आ ही पहुँची थी। रिचार्ड की चिट्ठी ! शायद उसे अभी भी बाजार में अंडे मिल जाँय यदि वह दूसरे जहाज पर रहता तो हम लोग कभी भी नहीं मिल सकते डायरी रात को देर तक सदा खुली रहती।

वह जब मुड़ी तो पहले फर्श पर पहुँच चुकी थी। वह सीढ़ी पर चढ़ने लगी। वह तीव्रतर गति से दरवाजे को खोलकर पत्र पढ़ने लगी। यह जरूर भ्रम है। केवल एक कागज का टुकड़ा मात्र था जिस पर पेंसिल से लिखे शब्द ही

शब्द थे। यह पूर्व जीवन की बात थी। सेनाधिकारियों के पोस्टकार्ड ही की तरह। बहुत दिन हुए, बहुत। ये शब्द उसके जीवन प्रवाह को छिन्न-भिन्न कैसे कर सकते थे, प्रधानतः जब वह जीवन इतना स्वाभाविक, चारों ओर से पूर्ण है और दिन-दिन उत्तरोत्तर सुखकर और सुन्दर होता जा रहा है। '...आज भी मैं तुम्हें उसी तरह प्यार कर रहा हूँ और तुमसे एक ही कमरे मे मिलने की, मिलकर रहने की प्रबल इच्छा है, यहाँ भोजन-सामग्री अच्छी और पर्याप्त प्राप्त हो जाती है।'

वह यहाँ आ ही कैसे गई ? क्या वह सीढियों से उतर, गली को पार करती दूकान पर पहुँची है ? यह सम्भव कैसे हो सका ? अपने जानने मे तो वह कमरे में बैठी पत्र पढ रही थी। अन्दर से घबड़ाकर उसने सर उठाया।

डेरी की मालकिन ने कहा 'तुम आज कुछ पीली-सी मालूम पड़ती हो, अन्ना, पर तुम्हारी जैसी परिस्थिति की नारी को तरह-तरह के उत्थान और पतन का सामना करना पड़ता ही है। एक मिनट हुआ, तुम्हारा पति यहीं था। मैं जानती हूँ तुम्हारे भाव क्या हैं ! मैं स्वयं भुक्तभोगी हूँ। तुम्हें विशेष चिन्ता का कारण नहीं। तुम तो स्वस्थ और गम्भीर प्रकृति की नारी हो।'

कार्ल ने दरवाजा खोला 'अन्दर नहीं।' उसने ताला खोला। कमरे मे चारों ओर उसने प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखा। चिट्ठी की गन्ध उसकी नाक में आई। उसने कहा 'कारबोलिक ? कुछ हुआ है क्या ?'

'मेरा पति क्या चाहता था ?'

'वह तुम्हारे लिए अधिक दूध के लिए आग्रह कर रहा था, परन्तु जितना दे सकती हूँ, दे रही हूँ। अधिक नहीं दे सकती।'

घर पहुँचने पर वह मिलेगा इस बात के ज्ञान ने, सडक पर की यात्रा ने तथा सीढ़ियों पर के आरोह ने उसके हृदय मे एक प्रकार की दृढता भर दी और उस घटना का सामना करने की शक्ति उसमे आ गई जो अपनी सच्चाई, नम्रता और भयानकता के साथ उसके मस्तिष्क मे घर कर गई थी।

कार्ल अभी भी दरवाजे के पास खडा था। प्रेम-पाप शकी होता है। इस चिन्ता से वह मरा जा रहा था कि अन्ना को कुछ हुआ तो नहीं, असामयिक प्रसव के कारण मर तो नहीं गई। एकाएक उसने देखा कि रेल की पटरियों पर अपनी छाती खोले और भुजाओं को पसारे ट्रेन को रोकने के लिए खड़ा है—भाग्य प्रबल है। ट्रेन का रुकना किसी तरह आवश्यक है।

उसके बाद पदध्वनि सुनाई पड़ी। तुरन्त उसने पहचान लिया कि यह अन्ना की है। ध्यानावस्थित हो सुनने लगा। सीढ़ियों पर कोई भी उसकी तरह नहीं आता था। आनन्द-विह्वल हो वह घूम पड़ा 'अच्छी आई! क्या, बात क्या है?'

वे दरवाजे की राह मे आमने-सामने खडे थे।

'मेरे पति के यहाँ से एक पत्र आया है।'

मान लो कि उसने तुम्हारे साथ विश्वासघात कर, वह तुम्हारी अनुपस्थिति मे दूसरे पुरुष के साथ रह गई तो? बन्य-प्रान्तर की घासों मे पड़े-पडे उसने रिचार्ड को कहते सुना 'इससे तुम्हें क्या? तुम अपनी जबान पर क़ाबू रखो और रही अन्ना की बात, उसे तो .' और उसने देखा कि रिचार्ड ने किस तरह अपनी कुदाल उठाई और सनसन करती अन्ना के सर पर दे मारा।

परन्तु, उसने सोचा, अन्ना ने विश्वासघात नहीं किया है। यह एक दूसरी ही बात है। उसने अन्ना के लिए दरवाजा खोल

दिया। उसने थैली रखी और बैठकर उसकी तरफ देखने लगी। 'अब मुझसे सब कहो।' वास्तविकता और नियति के प्रति उसने इस तरह आत्म-समर्पण कर दिया था मानो वह कह रही हो ' जो होना हो सो हो, मेरे लिए दूसरा चारा नहीं। लौटने के बाद यदि वह मेरी हत्या भी कर डाले तो भी मैं भाग नहीं सकती।

कार्ल भी कायर नहीं था, वह वीर पुरुष था; घोर मानसिक संघर्ष के बाद ही वह अपने भाग्य के सामने झुका था। मृत्यु, पर परित्याग नहीं—उसने सोचा और उससे सब कह डाला।

वे अन्धकार हो जाने तक बैठे रहे। वन्य-प्रांत के चार नीरस वर्ष और बन्दी कैम्प के दिन उसके सामने आ गये। कार्ल ने कुछ छिपाया नहीं। उसे अन्ना के सामने वास्तविक रूप मे अपने को प्रगट करने में, अपने भावों के विकास-क्रम को दिखलाने में और यह दिखलाने में कि अब यह किस तरह निस्सीम हो गया है, बड़ा संतोष मिलता था। कभी अन्ना कार्ल की कहानी के बीच में प्रश्न करती जाती थी जिसका उत्तर वह यों देता था मानो स्वयं अपने से ही कह रहा हो।

'एक दिन रिचार्ड ने मुझसे कहा, 'मैं अन्ना को ऐसा प्यार करता हूँ जैसे कोई अपनी पत्नी को प्यार करता है। यही बात उसके साथ भी है, क्योंकि मैं उसका पति हूँ। वह समझदार औरत है।' और अचानक मैंने देखा कि तुम वीथिका मे मेरी प्रतीक्षा कर रही हो। सन्ध्या धीरे-धीरे आ रही थी। तुम्हारे सिवा कोई नहीं था। तुम प्रतीक्षा-रत थीं। वह दृश्य मेरे रोम-रोम में परिव्याप्त हो गया। तुम प्रतीक्षा मे थीं। बस यही एक शब्द

है—मानो तुम पृथ्वी पर नहीं थी। मैं ठगा-सा, लुटा-सा खडा रहा। तब तुम को मैंने पाया, अहर्निश देखने का अवसर पाया। तब से मैं तुम्हारे बारे मे सब कुछ जानता था।'

अन्ना ने आँखें बन्दकर लीं, वह उसकी तरफ झुक गई और वे दोनो गाल से गाल सटाये बैठे रहे। इस गम्भीर मिलन-वेला के गम्भीर महोत्सव मे समय और जीवन दोनो निस्पन्द थे। मानव को ऐसी घडियाँ नसीब नहीं होतीं क्योंकि पास ही में जीवन की वेदना दुबकी पड़ी रहती है और एक क्षण मे पुन. उसका क्रम जारी हो जाता है।

'यदि वह मुझे नहीं छोडे, तो हम लोगों का यों रहना सम्भव नहीं।'

'हाँ, यदि यही केवल राह है तो' उसने अवसाद भरी दृष्टि से कहा। पुन मृत्यु का भी सामना करने की दृढ़ता से प्रसन्न हो उठे।

वह रात को भोजन बना रही थी। उन्हें ऐसा मालूम हुआ कि भोजन बनाना, खाना, दैनिक कार्यक्रम सबका वर्तमान स्वरूप और महत्व ही बदल गया है। आज से उनका सारा जीवन प्रतीक्षामय हो गया। उनके जीवन में सिवा प्रतीक्षा-जीवन-शोषक प्रतीक्षा—के कुछ नहीं रह गया।

उसने काम छोड़कर एक बार पुन रिचार्ड की चिट्ठी पढ़ी। उस समय उसका सर दोनो हथेलियों पर था मानो वह किसी गम्भीर विचार में मग्न हो।

' आज फिर हम लोगों का जहाज चला। चारों ओर सुरग बिछी हैं' उसने जोर से पढा और उसके मस्तिष्क मे एक विचार आया 'शायद—' और उसने कुछ आगे नहीं कहा।

अन्ना ने सुना और वह समझ गई कि आगे वह क्या

कहना चाहता है और उसने अपनी नजर नीची कर ली।

उनके अस्तित्व का वह तार छू गया था जहाँ पाप की धारा एक काले घडे की तरह फूट पडती है। उन दोनो की आँखें मिलीं। प्रेम के गढ़ रहस्य का, जो रिचार्ड के स्वत्व का अवरोध कर रहा था, जादू फिर उन पर चल गया। वे प्रकृतिस्थ हुए। रिचार्ड की मृत्यु-कामना से भी वे मुक्त थे। वे किसी मूल्य को चुकाने के लिए तैयार थे।

दो आत्माओं के सम्मेलन में जिसमे जीवन का सारा रहस्य चमकता रहता है, सारे भय, सारी वाधायें, रोग-व्याधि यहाँ तक कि मृत्यु को भी जीतने की शक्ति आ जाती है।

नवम्बर आया। यूरोप के खून और वहुतों के भाग्य से लथपथ वर्फ के स्तर पिघलने लगे। राजाओं के वंश के वश नष्ट हो गये। नगरों में युद्ध से वचे सैनिकों की बाढ-सी आ गई।

वन्दियों का आदान-प्रदान प्रारम्भ हुआ। कुछ वन्दी वासे मे लौट भी आये। कार्ल और अन्ना भी प्रतीक्षा करते रहे। रिचार्ड कभी भी आ सकता है—इसी क्षण, एक महीने वाद, एक वर्ष वाद या कभी भी नहीं।

कार्ल की इच्छा-शक्ति या भाव-शक्ति मे जडता-सी आ गई थी सम्बन्ध-विच्छेद से तो मानो उसका जीवन कॉच की तरह चूर-चूर हो जाता। अन्ना अन्तिमनिर्णय कर देनेवाले समय के जल्द उपस्थित होने की प्रार्थना कर रही थी, क्योंकि आज की आशा और निराशा की सशयावस्था मे पडी दु खद अवस्था से तो मुक्त हो जाती।

मनुष्यों के लौट आने पर जो घरेलू लड़ाइयॉ प्रारम्भ हुई उनकी कथा लोग अन्ना से आ आकर कह जाते थे। एक कथा तो

ऐसी थी जिसका अन्त शायद बड़ा ही दु:खद हो। ज्योंही सारी बातें मालूम हुईं एक आदमी ने तो अपनी पत्नी को गोली मार देने की धमकी दी थी।

अवस्था ऐसी हो गई थी कि डर था कि कहीं कार्ल का काम भी न छूट जाय क्योंकि उसने दूसरे नगर मे एक मशीन खड़ी करने के काम को अस्वीकार कर दिया था। वासे को छोड़ कर ट्राम पर चढ़ने के एक मिनट बाद ही से वह इस चिन्ता से मरने लगता था कि बीच ही मे कहीं रिचार्ड आ तो नहीं गया। इसी भावना से अपने बेंच पर पडा-पडा उद्विग्न रहता और जब तक कमरे मे लौट नहीं आता तब तक चैन से न रहता।

एक दिन प्रात काल—वह कुछ ही दूर गया था—वह ट्राम पर से कूद पडा, क्योंकि उसे विश्वास हो गया था कि पास से जानेवाली ट्राम में उसने रिचार्ड को देखा था। वह पीछे दौड़ पडा और देखा कि लम्बा कोट पहनकर एक सिपाही घर मे प्रवेश कर रहा है। जब वह दरवाजे के पास पहुँचा तो मालूम हुआ मानो छाती पर वज्र-मुष्टि प्रहार हुआ। आखिर वह भयानक समय आ ही गया। वह धीरे-धीरे सीढ़ी के पास गया। दरवाजे के पास पहुँचा तो सर मे चक्कर आ गया। उसे पता नहीं चला कि उसने दरवाजा कैसे खोला।

सिपाही का कोई चिह्न नहीं। अन्ना खिड़की के पास चुपचाप खड़ी थी। वह प्रतीक्षा कर रही थी। वह उसके और उसके निर्जीव-से मुख को देखकर आश्चर्यित नहीं हुई। वह उसके पास चुपचाप गया, अपनी छाती से उसके सर को लगा लिया और चुपचाप फिर बाहर चला गया।

६

एक रेलगाडी, इतनी लम्बी कि उसका आखिरी डिब्बा उस समय तक एक गाँव के स्टेशन से दिखलाई पडता था जब उसका इञ्जिन दूसरे गाँव में प्रवेश कर जाता था, बर्फीले मार्ग से होकर धीरे-धीरे चल रही थी।

खुले प्लेटफार्म पर सिपाही लोग खडे या बैठे थे। गाडी मे कई मुक्त वन्दी तथा अन्य यात्री अपने बक्सों और गठरियों के साथ थे। प्रत्येक खिड़की से गठरियाँ मनुष्यों के सर या पीठ पर दिखलाई पडती थीं। मवेशियों के डिब्बे मे भी, 'आठ घोड़ों के लिए' जिसमे से दरवाजा निकल गया था, आदमियों का समूह दिखलाई पड़ता था। कठिनता से तीन हज़ार यात्रियों के बैठने की जगह जिस गाड़ी में थी, उसमे दस हज़ार आदमी ठूँस दिये गये थे। दु ख और दैन्य से लदी गाडी एक दीन-प्रदेश से धीरे-धीरे जा रही थी।

गाडी अपनी साधारण गति के दशमाश चाल से चल रही थी। टाइमटेबुल का ठिकाना नहीं था। इञ्जिन टूटा हुआ था और ईंधन मे आधा बालू और आधा ककड था। एक साइकिल का चलानेवाला बिना परिश्रम के ही गाड़ी के साथ उस बर्फीले प्रदेश मे चल रहा था, इतना ही नहीं एक सिपाही से बात करता जा रहा था। 'हॉ, हॉ, क्रान्ति! अब दूसरी बात होगी। तुम सब परिवर्तित पाओगे।' जब गाड़ी खड़ी हुई वह आगे चला गया। टिकट वगैरह की बात नहीं थी, कुछ रह ही नहीं गया था।

एक डिब्बे मे से जो धुएँ से भरी, भींगी, पसीने की गन्ध से भरी कोठरी की तरह था, एक सिपाही ने एक चाकलेट की टिकिया निकाली जिस पर चॉदी का वर्क था। वह ऐसे प्रदेश से आ रहा था जहॉ चाकलेट मिलता था।

एक बवेरिया के रहनेवाले ने मन्द हॅसी के साथ कहा 'भई तुमने इसे कहॉ पाया? सचमुच यह बड़ा सुन्दर है। जरा सूँघूँ तो। क्या यह विशुद्ध है?' उसने सूँघा। सब ऑखें उस चाकलेट और उसके चॉदी के वर्क पर लगी थीं। वह ऐसा चमक रहा था मानो नरक में एक तारा।

उस गम्भीर वातावरण मे जहॉ कहीं-कहीं मजाक की बात हो जाती थी, उस आदमी ने अपने चाकू से चाकलेट मे से काट-काटकर अपने सब साथियों के हाथ मे दिया और शेष अश को अपने पाकेट मे रख लिया 'अपने बच्चों के लिए।'

तब उसने अपनी स्त्री और बच्चों का फोटोग्राफ निकाला। एक एक कर सबों ने अपने परिवार का फोटो निकाला। सब एक दूसरे की तसवीर लेकर देखने लगे। कहानियों, वर्णन और आश्चर्यमयी ध्वनियों से डिब्बा गूॅज उठा, ऑसुओं और भावा-

वेश में अर्द्धस्फुट आवाज से। घर लौटनेवालों के पास कुछ नहीं था केवल उनके अरमान ही थे।

रिचार्ड ने चाकलेटवाले को उसका फोटो दे दिया 'मेरे पास अपनी पत्नी की तस्वीर नहीं। मुझे खेद है कि स्मृति इतनी धूंधली पड़ गई है कि इन वर्षों के वीच उसके वास्तविक स्वरूप की मानसिक कल्पना भी नहीं कर सका। पर अब अधिक देर नहीं।'

'तव तुम उसे प्राकृतिक अवस्था मे पाओगे।' उस ववेरिया के निवासी ने कहा। उसकी हँसी मे मुर्दनी छाई रहती थी। उसके कपडे काले, हैट मुलायम और दाढ़ी नुकीली थी। वह सारी राह खड़ा रहा और सब से वातें करता रहा।

गाड़ी में कई बार जोर से धक्का लगा। गाडी रुक गई। यात्री लोग इन सब वातों से अभ्यस्त हो गये थे। वातचीत जारी रही। रिचार्ड गठरियों, लोगों के पैरों और फर्श पर बैठे साथियों को लांघ कर आगे वढा। दरवाजा गठरियों से भरा था अतएव वह खिड़की के वाहर किसी तरह निकला।

प्रत्येक खिड़की से कोई न कोई अवश्य झाँकता था। वे जम्हाइयाँ लेते और अँगड़ाइयाँ लेते और अपने कोट के नीचेवाले वटन को खोलते। पेशावखाने तक ठसाठस भरे रहते। दरवाजे तक गठरियों के मारे अवरुद्ध हो जाते।

रिचार्ड ने वड़ी सावधानी से लँगडा कर दो-चार डग भरे। अपने चलने की योग्यता की वह जाँच कर रहा था। थोड़ी ही देर पहले एक गाडी का चक्का उसके पैर पर से होकर चला गया था। वह दिन और रात दो सप्ताह तक चलता रहा था। जब उसे निश्चय हो गया कि ट्रेन वहाँ कुछ देर तक ठहरेगी, वह

बर्फीले मैदान पर कुछ दूर गया, बैठ गया और पतलून को चढ़ाया। उसका पूरा पैर एक जोड से लेकर दूसरे जोड तक अधपके खजूर की तरह काला हो गया था।

दूसरे साथी आगे चढ गये। वह स्वय बर्फीले विस्तृत मैदान में खडा रहा, चौड़ी छाती, टोपी मे कोई बैज नहीं, और पाँवों को छूता हुआ कोट। भौहों और दाढ़ी की घनी झाडियों ने नाक के सिवा सब को आच्छादित कर लिया था, उन झाडियों मे से होकर उसकी आँखें इस तरह झाँक रही थीं जैसे कोई अकेला जानवर साथी खोज रहा हो।

काली, गन्दी, बिखरे बालवाली, युद्ध के उच्छिष्ट की तरह सूरत लिये हुए रिचार्ड जब बीसवीं शताब्दी के आवागमन के साधन रेलगाडी के समीप पहुँचा तो ऐसा मालूम हुआ कि सभ्यता के आदि युग का एक शेष व्यक्ति अपनी कन्दरा से निकलकर धीरे-धीरे आ रहा हो।

उसने सोचा मैं अपने कमरे में, दो ही घटों के अन्दर, अन्ना के पास पहुँच जाऊँगा। ठीक उसी समय धाय अन्ना से कह रही थी 'सब ठीक है।' यद्यपि अन्ना को किसी तरह की तकलीफ नहीं थी परन्तु कार्ल की इच्छा के सामने झुकना पड़ा और उसने अपनी परीक्षा कराई।

बूढी धाय ने हँसते-हँसते कहा 'तुम मूर्ति की तरह दर्शनीय हो। तुम ही क्यों? मैं तो बहुत-सी ऐसी नारियों को देखती हूँ। यदि वे लोग केवल जान पाते, अरे बाप! परन्तु तुम एक सुन्दर व स्वस्थ महिला हो, ऐसी कि सतप्त आँखों को राहत देनेवाली।' अन्ना नम्र और सफेद सोफे पर पड़ी थी। उसके आरामदेह कमरे से भूने सेब की सोंधी महक उठ रही थी।

रिचार्ड की बिखरी लटें खिडकी पर आ गईं। उसने अपनी लम्बी भुजाएँ गाडी के डिब्बे मे फैलाईं। उसके साथियों ने उसे खींचकर बैठा दिया।

सन्ध्या समय गाड़ी नगर के समीपवाले प्रदेश के कारखाने के मकानों के नजदीक होकर जाने लगी जहाँ कार्ल अभी तक बेंच पर बैठा था।

यात्रा की अवधि मे डिब्बे के यात्री एक दूसरे से परिचित हो गये थे। यदि एक मामूली बात छिड़ जाती तो बडे ध्यान से उसमे भाग लेते। वे अब भी बात करते ही जाते थे, परन्तु उनकी दृष्टि उड़ी-उड़ी-सी रहती थी और कभी कभी 'हाँ, हूँ' कर देते थे। प्रत्येक मानो वहाँ नहीं था, सबका ध्यान अपने परिवार की ओर लगा था।

रिचार्ड मे असाधारण शारीरिक और मानसिक स्थिरता थी और उसकी शाति सुख और दु ख की घटनाओं से भग नहीं होती थी, यदि वे घटनाएँ अपनी सीमा-बडी सीमा के भीतर हों, बदियों के कैम्प की सीमाहीन, कठिन, दैनिक यातनाओं ने रिचार्ड के बहुत से साथियों की आत्मा को कुचल डाला था। आत्मसम्मान के भावों को सुखा दिया था, परन्तु रिचार्ड को वे छू भी नहीं सकी थीं। उसने अब तक जो सहन किया है उसकी परिधि जब तक नहीं बढ़ी, उसके भारावनत शरीर पर और भी बोझ नहीं पड़ा, तब तक वह इस तरह व्यवहार करता रहा मानो कुछ हुआ ही नहीं।

केवल एक बार ही उसके हृदय का दृढ़ बाँध टूटा था। दिन भर की कड़ी मेहनत का मारा-भूखा वह कैम्प मे आया। मालिक बैरक मे आ गया। बिना कुछ कहे अकारण ही उसने

रिचार्ड के सामने से थाल खींच ली और भोजन को काले फर्श पर फेंक दिया और गरज-गरज कर कहने लगा 'खाओ !. खूब खाओ, सूअर के बच्चे ।. जाओ नीचे और खाओ' और उसने उसके मुँह पर तमाचा मारा ।

इतना होने पर भी उसके भाव प्रकट नहीं हुए, परन्तु एका-एक उसकी अवस्था उस मशीन की तरह हो गई जिसका साज लीवर पर दबाव पड जाने के कारण जरा बिगड जाता है, पर फिर वह पूर्ववत् चलने लगता है । वह पूर्ववत्—न तो अधिक तेजी से और न अधिक धीरे ही—छावनी को पार कर बाहर गया और अपनी कुल्हाडी उठाई । उसे यह खूब मालूम था कि गार्ड की हत्या के आधे घण्टे के बाद ही वह गोली से उड़ा दिया जायेगा, परन्तु इसकी परवाह उसे अब नहीं थी । यह तो गार्ड की जिम्मेवारी थी , अपनी दाम्भिकता को सीमा के अन्दर रखना उसका धर्म था । अब कुछ अधिक सोचने विचारने का समय नहीं था । यह अब स्पष्ट था कि गार्ड की हत्या की जाय और तत्सम्बन्धी जो यन्त्रणाएँ हों, धीरता पूर्वक उनका सामना किया जाय, परन्तु लौटने के बाद तुरन्त ही गार्ड को उस स्थान को छोड देना पड़ा । उसी रात को गार्ड स्थानान्तरित हो गया । इसी आकस्मिक घटना के कारण उसके और रिचार्ड दोनों के प्राणों की रक्षा हुई ।

अन्त मे गाड़ी धडधडाती हुई स्टेशन पर आकर खड़ी हो गई । रिचार्ड ने अपने साथियों से गम्भीर ढङ्ग से विदा मागी । यह गम्भीरता उसकी उतनी ही अपनी थी जितना उसका गम्भीर सर । तत्पश्चात् वह अपनी बाजुओं के बीच गठरी दाबे, लँगडाते हुए घर चला । उस समय अन्ना सुदूरस्थित कारखाने

से लौटकर आनेवाले कार्ल के लिए भोजन परोसने की तैयारी कर रही थी। आनन्दातिरेक और औत्सुक्य उसकी स्वाभाविक प्रगति को तीव्र नहीं कर सके, कारण चार वर्षों से अन्ना के मिलन की लालसा को हृदय में पोसे वह जीवन व्यतीत कर रहा था और इस अवधि के बीच उसे प्रतीक्षा करने की शिक्षा मिल गई थी। अब तो मिलन हुआ ही सा था। वह अपने मक़सद पर पहुँच गया था। वास्तविक मिलन तो उसके हृदय की वर्तमान अनुभूति की मात्रा को तो तीव्र करने से रहा। उसकी विराट निश्चयात्मकता के पास एक अनिर्वचनीय, अस्पृश्य तथा हल्का-सा आमोद उडा-उडा सा फिर रहा था, हाथी की चारों ओर एक तितली की तरह।

स्थान दूर था। उन दिनों ट्राम-गाडियाँ नहीं चलती थीं। कार्ल के कारखाना की दूरी तो तिहाई अधिक ही थी, परन्तु वह तेजी से चला और उसके पैर सशक्त थे।

अन्ना ने चौका लगा दिया और नीचे रोटी लाने के लिए गई। सन्ध्या समय, जब वह जानती थी कि कार्ल आनेवाला है, वह प्रशान्त हो जाती थी।

एक खाली गाड़ी जिसे दो मजबूत घोडे खींच रहे थे, रिचार्ड को मिली। ठहर कर लँगड़ाते मनुष्य ने गाड़ीवान से कहा कि वह गाड़ी पर चलेगा। रिचार्ड पीछे बैठ गया और फिर घोडे धीरे-धीरे आगे बढे।

फिर अन्त में थोडी देर उसे पैदल ही चलना पडा। दरवाजे पर मोटर-मिस्त्री मेरी के साथ खडा था। रिचार्ड ने मकान को ध्यान-पूर्वक देखा। चार वर्ष पूर्व तो यह मकान नया था; परन्तु अब इसका अंश झाड-पोंछ के बिना

मलिन और ध्वस्त-सा हो गया था।

मोटर-मिस्त्री ने पूछा 'गृह के किसी व्यक्ति को देख रहे हैं क्या ?' और अन्ना का तुनुक-मिजाज दोस्त सबल और लौह-कठिन, आलुलायित कुन्तल सैनिक की ओर, जिस पर युद्ध के बोझ के चिह्न मौजूद थे, जरा घबड़ाया-सा देखने लगा।

उसने आनन्दावेश मे आकर कहा—'हाँ, हाँ, मेरी स्त्री' और उसने उसका नाम बताया। 'वह अब भी यहाँ रहती है न ?'

'हाँ, परन्तु . ' मेरी ने घबडाहट में कहा और वह समझ नहीं पाई आगे क्या कहे।

एक दूसरे नवयुवक मजदूर ने जरा मजाक के तौर पर मानो मेरी के वाक्य को पूरा करते हुए कहा—'परन्तु अन्ना का विवाह एक ही आदमी से हो सकता है—एक साथ ही दो से नहीं।' वह दरवाजे की राह में खड़ा था और रिचार्ड उसके आगे, तब तक बढ़ गया था।

लँगड़ाते हुए जब वह आगे बढ़ा उसके कोट का किनारा सीढ़ी पर सुहर रहा था। वह था थका माँदा, कीचड से लथपथ, झुका हुआ मानो अकेले भयकर यत्रणा की छाया में वह चारों वर्ष चलता ही रहा है और अभी-अभी ही उस स्थान पर पहुँचा है।

अन्ना ने उसके लँगडाते हुए पैर की गम्भीर ध्वनि को सुना मानो दो मनुष्य एक भारी बोझ सीढ़ी के ऊपर ले जा रहे हैं। उसके मुख पर एक चमक और ज्योति आ गई थी जैसा कि प्रसव काल के पूर्व प्राय. हो जाता है।

रिचार्ड को खटखटाना नहीं पडा। दरवाजा खुला था। वहाँ एक काला अजनबी मनुष्य खड़ा था। दोनों चुप ! अन्ना ने मौन रूप में ही कुछ पूछा, उसकी आँखें स्थिर थीं।

रिचार्ड ने उस कमरे मे चारों तरफ़ निगाह दौडाई 'अन्ना, मुझे पहचानती हो ?'

नहीं, उसे वह नहीं पहचानती थी। सडक पर देखती तो कभी नहीं पहचानती। उसे मालूम था यह वही है—अवश्य वही है। उसे ऐसा मालूम होने लगा मानो हाथों और पैरों से खून की धारा बडे वेग से ऊपर की ओर चली। त्वचा से चिनगारियॉ-सी निकलती मालूम पड़ने लगीं।

अग्रसर हो उसने अन्ना की ओर अपनी भुजाएँ फैलाईं। अन्ना ने अपनी बर्फ-सी ठण्डी अँगुलियॉ उसकी भुजाओं में दे दीं और तब रिचार्ड के अपने पुराने सम्बन्ध की दृढ़ता का पूरा विश्वास हो गया। केशों का समूह जिसमें मुख शायद छिपा पडा था, अन्ना के मुख के समीप पहुँचा। अन्ना का सर मानो स्वय बिना प्रयास ही घूम गया।

'गन्दा है न ? हॉ, यह यात्रा के कारण से।' उसने अपनी टोपी उतारी, गठरी सम्हाली परन्तु एक ओर अपनी गन्दी चीजों को और दूसरी ओर कमरे की स्वच्छता को देख उन्हें पकडे खडा रहा ; समझ नहीं पाया क्या करे। कुछ महीनों पहले कार्ल को भी ऐसा ही सकोच हुआ था।

पुन एक बार उसने उस स्वच्छ, सुखद और आश्चर्यजनक कमरे के चारों ओर दृष्टि दौडाई। उसमें आराम-पूर्वक जीवन व्यतीत करने की कल्पना से उसकी ऑखें चमक रही थीं। उसकी ऑखें अन्ना पर आकर स्थिर हो गईं और वह आनन्दाभिभूत हो गया 'मेरी प्यारी अन्ना ! तुम दीर्घकालव्यापी प्रतीक्षा मे लीन रही हो और आज तुम्हें यह आश्चर्य हो रहा है कि उसका अन्त कैसे हो गया ? है न ?'

और वह, जिसने हजारों बार सकल्प किया होगा कि मिलते ही पहले ही क्षण मे उससे सारी बातें कह देगी, मौन रह कर मानो असत्य बोलती रही। वह हत्या कर नहीं सकी। कार्ल के लौट आने पर, महीनों दिन-रात विचारमग्न रहने पर वह वस्तुस्थिति की वास्तविकता को नहीं समझ सकी जब तक वह यथार्थ घटना के सम्मुख नहीं आई।

उसकी बोलती बद हो गई। शब्द नहीं थे जिन्हें वह उच्चरित कर सके। अब तो सघर्ष की कोई बात नहीं थी। हक्का-बक्का-सा रिचार्ड ने देखा कि वह, एक शव की तरह, दरवाजे तक गई और बाहर चली गई। सीढ़ियों के नीचे आँगन के बाद सडक थी। उसी पर वह कार्ल की तरफ दौड़ी। तब तक कार्ल, चूँकि ट्राम-गाड़ियाँ चल नहीं रही थीं, एक दूसरी छोटी राह से गली में मुड गया था। अन्ना को वह देख नहीं सका।

युवक कारीगर जिसने कहा था कि अन्ना की शादी एक ही आदमी से हो सकती है, अब भी दरवाजे पर सिगरेट पीता हुआ खड़ा था। उसने कार्ल की ओर एक प्रश्न-सूचक हँसी के साथ देखा। उसने अपने दो साथियों से जिनसे उसने सारी कहानी कह दी थी, पूछा 'अब क्या होगा ?' उस बासे के बहुत से रहनेवालों को तब तक यह बात मालूम हो गई थी कि एक सिपाही लौटकर आया जो अन्ना को अपनी स्त्री कहता है।

कार्ल जब जल्दी से आँगन को पारकर रहा था, पडोसी लोग अपनी-अपनी खिड़कियों से उसकी ओर देख रहे थे।

जब से रिचार्ड के लौट आने की सम्भावना अदृष्ट की तरह उनके सामने नाचने लगी थी तभी से वे दोनों प्रेमी एक ऐसे अवास्तविक जगत मे निवास करने लग गये थे जिसे कोई भी

वस्तु छू नहीं सकती थी, वे एक-दूसरे से इस प्रकार आवद्ध हो
गये थे कि एक की छोटी सी सेवा भी प्रेम के विजय-निर्घोष का
रूप धारण कर लेती थी।

कार्ल की आदत थी कि जब वह पहले छत पर पहुँचता
अकारण ही, अपनी गति मद कर देता और आज भी इस
तरह का व्यवहार करते समय वह इसी भाव से भरा था कि
अन्ना उसके लिए उत्सुकता-पूर्ण प्रतीक्षा कर रही है।

उसने दरवाजा खोला। अभी तक वह इसी विश्वास में
मस्त था कि अन्ना उसकी पग-ध्वनि पहचान कर, अन्दर से
मानो, उसी की तरह द्रवित हो अपने प्रेम-पुंज को उससे मिलने
के लिए भेज रही है।

उसके भाव मे एक आकस्मिक और जबरदस्त परिवर्तन
हुआ। उसकी तुलना उस आदमी के भावों से की जा सकती
है जो एक क्षण के लिए अपने कमरे से बाहर जाता है और
दूसरे ही क्षण लौटता है तो शून्य मे गिर सा पडता है क्योंकि
अब छत का पता ही नहीं।

'अरे तुम ?' रिचार्ड ने आश्चर्यान्वित हो कहा। पर अब
भी उसकी मन शान्ति भग नहीं हुई थी। उसने अपनी गर्द
कमीज गठरी मे रखी। 'देखो तो, तुम से फिर मुलाकात हो
गई और इतनी जल्दी! ..अभी तीन मिनट पहले ही यहाँ पहुँचा
हूँ, सच कहता हूँ पर बैठो तो सही ' उसने मेज़ की तरफ
इशारा किया 'या उस सोफा पर।'

कार्ल यह पूछ न सका कि अन्ना कहाँ है, मानो किसी चीज
ने आकर उसका मुँह बन्द कर दिया। वह बैठ गया सोफे
पर। अब भी रिचार्ड के मुख पर एक सूक्ष्म और उल्लासमय

प्रसन्नता विराज रही थी जो उसी मनुष्य में दिखलाई पड़ सकती है जो सुगठित वदन और कष्ट-सहिष्णु मनुष्य हो और जो अन्त में, इतनी विपत्तियों से पार होकर, अपने मकसद के पास पहुँच गया हो।

'तब तुम यहीं रहते हो ? खाया कुछ ? कब तुम आये यहाँ ? वह तुरन्त आयेगी और हम लोगों को भोजन देगी। सब यार है।'

उसने चारों ओर देखा मानो वह कह रहा हो, देखो यही मेरा जीवन है, मैं ऐसे ही रहता हूँ. यही अन्ना है और यही मेरे लिए सर्वस्व है। उसकी आँखों मे प्रसन्नता थी पर उसमे सयम था।

कार्ल के हृदय का बोझ और भी गुरुतर हो चला जब उसने देखा कि रिचार्ड ने अपनी गठरी खोली, साफ वस्त्रों को ड्रावर में रखा और गन्दों को एक कोने मे मेज पर।

'अन्ना इन सबों को साफ करेगी। इन्हें सोडा मे डालकर ठीक से उबालना होगा।' वह कमरे के जर्रे-जर्रे से परिचित था। बिना एक क्षण भी सोचे उसने आलमारी की सबसे ऊँची तह को खोला और अपने कागजों को दाहिनी ओर रख दिया जहाँ वे सदा रहते थे। 'आराम से बैठो, कोट तो उतार डालो यहाँ तुम्हें देखकर बडी प्रसन्नता हुई।'

इसका व्यवहार एक आतिथ्य के रूप मे हो रहा है इसी-लिए मैं अन्ना के बारे में नहीं पूछ सकता। नहीं, नहीं, मुझे अब सब कुछ स्पष्ट रूप से इसे बतला देना होगा। अवश्य।

उसके अन्दर जो एक मुर्दनी-सी छा गई थी, वह इस सकल्प के आते ही दूर हो गई। सारे भाव काफूर हो गये। उसने मन

मे सोचा कि यह उसके जीवन और मरण का प्रश्न है, ठीक उसी तरह जैसे एक निर्जीव व्यक्ति अपनी सारी शक्तियों को एकत्र कर अपने शत्रु को मारने या मरने के लिए द्वन्द्व-युद्ध के लिए उठ खड़ा हो।

उसने कहा 'अन्ना आ रही है' और उठ खड़ा हुआ। इन शब्दों के अन्दर जो एक विशाल गह्वर था उसे रिचार्ड देख नहीं सका।

स्वेदपूरित, विस्फारित-नयना और आलुलायित-केश-कुन्तला अन्ना कमरे मे लड़खड़ाने लगी। 'वह यहीं है ?' उसने पहले तो दूसरी ओर देखा पर पीछे कार्ल की गोद में गिर पडी।

जब वह उसकी गोद मे पडी थी तो उसके शरीर की शीतलता के स्पर्श से वह एक विचित्र आनन्द की उष्णता का अनुभव कर रहा था। रिचार्ड उनके समीप आ गया। वह डर तो अवश्य गया था, पर अभी तक निश्शक था। 'बात क्या है ? बीमार हो क्या ?'

उसने अपने को छुडाया और दीवाल की टेक लेकर, उद्विग्न-सी, चकित-सी सामने देखने लगी। कार्ल ने कहा, 'तुम अन्ना को छोड दो।' उस समय उसकी आँखों से आग की गोलियाँ निकल रही थीं।

रिचार्ड को यह बात समझ मे नहीं आई। ये बहुत दूर से चली थीं और रिचार्ड के पास पहुँचने मे एक लम्बी अवधि की अपेक्षा थी। बात राह ही में थी, रिचार्ड के पास ठीक तरह से पहुँची नहीं थी। वह सोच रहा था कि यदि अन्ना ने कार्ल के साथ गृहस्थी बना ली है तो मैं दोनों को मार डालूँगा और वे फिर उठ नहीं सकेंगे, परन्तु दूसरे ही क्षण अन्ना को सदा के लिए

खो देने की कल्पना से काँप उठा और वह उसे क्षमा-प्रदान के लिए तैयार हो गया।

उसने पूछा 'कहो बात क्या है?' और गम्भीर-मुद्रा से सोचने लगा। यह तो अनर्गल प्रलाप कर रहा है—'बोलो, तुम बोलो-अन्ना। बात क्या है?'

कोई उत्तर नहीं। वह उसकी ओर आगे बढ़ा। कार्ल बीच में आ गया 'अन्ना मेरी पत्नी है। मैं तुम्हें सब समझा दूँगा।'

तब एकाएक वह समझ गया कि अन्ना गर्भवती है। 'यह बात है? अब मुझे समझाना क्या है रे, सूअर के बच्चे।' उसी शान्ति के साथ जैसे वह जेलखाने मे रहता था, बैरक से बाहर अपनी कुल्हाडी लेने चला गया।

वे दोनों बस एक बार ही सम्पर्क में आये और परिणाम यह है कि अब अन्ना गर्भवती है। यही बात मुझसे कहने चला है, सूअर का बच्चा। अन्ना और उसके गर्भ की तो कोई बात नहीं। उसको तो मैं उदारता-पूर्वक पी जाऊँगा, परन्तु कार्ल की बात दूसरी है। उसके लिए इतना ही काफी है। वह जानता था कि कुल्हाडी कहाँ है और उस कोने मे गया।

परन्तु रिचार्ड पर जो गहरी चोट बैठी वह एक दूसरी ही दिशा से आई—एकदम अप्रत्याशित। अन्ना उसकी ओर दौड़ी-दौडी गई 'मैं उसके बिना जी नहीं सकती। मेरी हत्या कर डालो।'

'उसके बिना नहीं जी सकती? तुम नहीं जी सकती उसके बिना? तुम मुझे नहीं चाहती? मुझे नहीं चाहती?'

'अब मैं लाचार हूँ।'

यह अब उसको असह्य था, अब वह आघात नहीं कर सकता था। उसका हृदय अन्दर ही अन्दर कटे वृक्ष की भाँति बैठ गया।

वह मेज पर बैठा रहा। उसे इन वातों पर विश्वास नहीं होता था। 'तुम लाचार हो, अन्ना! लाचार? क्यों...क्यों? तो क्या उसे ही केवल चाहती हो?'

अपनी जीवन-ज्योति जो बुझ चुकी थी, उसके लिए छटपटा रहा था। उसने हक्का-बक्का होकर कहा, इधर आओ, कहो बात क्या है? मुझे समझा कर कहो।'

वह उठ खड़ा हुआ। 'मैं अवश्य अवश्य ' वह समझ नहीं सका क्या अवश्य! वह फिर मेज पर लेट गया। उसके बाद एक शब्द भी उसके मुख से नहीं निकला।

वे दोनों उसकी तरफ देखते रहे। बाल अस्तव्यस्त, धूल-धूसरित, आधारहीन, वह आदमी जो लड़कपन मे ही भूल गया कि रोना किसे कहते हैं, झुकी कमर से बैठा हुआ, सूनी आँखों से अनन्त शून्य की ओर देख रहा था, करुणा उसे टूक-टूककर रही थी। उसी क्षण उन दोनों का डर जाता रहा।

अन्ना ने कार्ल को कहते सुना 'अब हम दोनों को यहाँ से चल देना चाहिये, और वह अपने हैंडबैग मे चीजें सम्हालने लगी। कई बार उसे रिचार्ड के पास से होकर जाना पडा और उसकी दृष्टि कई बार उस पर टिकी भी, पर उसकी वेवशी पर तरस खाकर उसके साथ ठहर जाने की चाह एक बार भी उसके मन मे नहीं आई, क्योंकि ससार में प्रेम की तरह क्रूर दूसरी वस्तु नहीं जहाँ पर प्रगाढ़ भक्ति तथा सम्पूर्ण आत्म-समर्पण भी उस खूनी अहभाव के सामने तुच्छ है।

मेरी ने दरवाजे पर थपथपाया। एक हल्की-सी थपकी और डरते-डरते अदर आई। सब मौन थे। वह अन्ना की सहायता करने लगी और उस निर्दय व्यापार की एक मात्र साक्षी थी।

वे सब अपना काम करते गये ; संदूकों से चीज़ों को निकाल निकाल बाँधते गये। रिचार्ड ने कुछ देखा या सुना नहीं। उसके मानस पट के सामने अन्ना के साथ व्यतीत किये हुए अतीत के सारे दृश्य एक-एक कर आने लगे। कैसा सुखमय था वह समय ! वह हिला ; उसने अपना सर और गरदन उठाई मानो वह बोलना चाहता था, एक बार और प्रयत्न करना चाहता था, निस्तब्धता से अभिभूत होकर उसका सर झुक गया।

अन्ना सब ठीकठाक कर चुकी। उसने हैण्डबैग रखा। 'रिचार्ड' और पुन उठा लिया। रिचार्ड ने कहा सिर्फ 'जाओ' और यह पहला अवसर था कि दाढ़ी की झाड़ी मे से उसका मुख विस्फारित दिखलाई पड़ा।

उसमें इतना साहस नहीं था कि हाथ मिलाने को बढ़ाये, उसने कार्ल और मेरी की ओर बेवशी की दृष्टि डाली और दर्वाजे की ओर मुड़ी।

कार्ल की दशा ठीक उस वकील की तरह थी जिसने एक हत्या के अपराधी के मुकदमे मे पैरवी की हो और एक दिन सुबह, फांसी के एक घंटा पूर्व, अंतिम भेंट के लिए गया हो। वह यह नहीं समझ पाता कि विदा कैसे हो, Good-bye कहे या Good-morning। वह बिना एक शब्द कहे ही बाहर चला गया। मेरी के चिकने और रोने के कारण सिंचित सेव की तरह कपोलों पर आँसू झर-झर गिर रहे थे।

एक मनुष्य और कुछ स्त्रियाँ दूसरी छत पर खड़ी थीं, उन्होंने दोनों प्रेमियों को जाते हुए देखकर कुछ नहीं कहा। दूसरे आँगन के प्रवेश-द्वार पर कुछ पड़ोसी-गण एकत्र हो गये थे और

वे इसी घटना पर बातें कर रहे थे। उन्हें राह दे देने के लिए वे हट गये और फिर उनके पीछे-पीछे चले।

लड़कों का एक झुण्ड हाथ में हाथ मिलाकर चलनेवाले, ठढ के मारे नीले पडे दो जल-पक्षियों के उस समारोह में साथ हो लिया। खिड़कियों के पीछे क्रोध से जलते मुख थे। उत्तेजना-पूर्ण कोलाहल और गाली के प्रथम-शब्दोच्चार से आगे होने वाले अपमान की आँधी का सूत्रपात हुआ।

बासे के रहनेवालों ने अबतक एक विवाहित स्त्री के इस खुल्लम-खुल्ला व्यवहार के साथ कुछ भी हस्तक्षेप नहीं किया था। यहाँ तक कि किसी का ध्यान भी इस तरफ नहीं गया था। अब उन्हें अन्ना की इस मक्कारी और चालबाजी पर बडा ही क्रोध आया जिसके द्वारा उसने छ. महीने तक सारे पडोसियों को सफलता पूर्वक चक्कमें में डाले रखा।

मेरी ने आर्द्र होकर, अपमान-पूर्ण कोलाहल से उद्विग्न हो, आदमियों के झुण्ड से जो दोनों प्रेमियों के धीरे-धीरे समीप आ रहा था, आँखों में आँसू भर कर कहा 'उसका दृढ विश्वास है कि वह उसका पति है।'

अपमान और हास्य-पूर्ण कोलाहल के शब्द दीवालों से टकरा-टकराकर रह जाते थे। इसी स्थिति में वे घर से बाहर निकले। कार्ल के हाथ मे हैण्डबैग था।

वे अब बर्फीले मैदान पर थे। झुण्ड का बड़ा अश तो छँट गया था, पर बडे-बडे लड़के अब भी पीछा कर रहे थे। एक ने बर्फ की गोलियाँ बनाईं और दोनों प्रेमियों पर फेंकी। फिर वह भी अपने पैंट के पाकेट में हाथ डाले, सीना ताने रुक गया।

'मेरी, उसके पास जाओ! उसके पास जाओ!' अन्ना ने दीनता-पूर्वक प्रार्थना की।

मेरी ने मन में पक्का कर लिया कि वह रिचार्ड को अकेला नहीं छोड़ेगी। दस पग और आगे चल कर वह रुक गई। पुन. उसमे पुरानी स्फूर्ति आ गई और उसने खुश होकर अन्ना को पुकारा 'अन्ना, विदा। गुडबाइ।'

वे उस मैदान मे पहुँचे जो नगर और गाँव के बीच में स्थित था। गम्भीर, ताजा और बिना रौंदा हुआ बर्फ उनकी निस्पन्द पगध्वनि को सुन रहा था। वे एक कुञ्ज मे घुसे जहाँ उस वन्य-खण्ड मे पडे-पडे चार्ल्स ने प्रतीक्षा-रत अन्ना को देखा था। चाँदनी बर्फ से मिल कर रजनी को आलोकित कर रही थी। बर्फ से भरी डालियाँ उज्वल सतह पर तरह तरह के प्रतिबिम्बों की रचना कर रही थीं। तारे टिमटिमा रहे थे।

वे बोले नहीं, सोचते भी नहीं थे। वे एक अगम्य रहस्य की ओर आगे बढ़ते गये और मृत्युपर्यन्त कोई भी शक्ति उन्हें अलग नहीं कर सकी।

सरस्वती प्रेस के प्रकाशन

४१ प्रेमतीर्थ (प्रेमचन्द) १)
४२ प्रेम-द्वादशी ,, ||)
४३ पाँच फूल ,, |||)
४४. परिवर्तन (सुदर्शन) ||)
४५. पञ्चलोक ,, ||)
४६. पिकनिक
(कमलादेवी चौधरी) १||)
४७. फाँसी (जैनेन्द्रकुमार) |||)
४८. मानसरोवर (प्रेमचन्द)
४ भाग, प्रत्येक भाग २||)
४९. समरयात्रा (प्रेमचन्द) १)
५०. सुप्रभात (सुदर्शन) २)
५१. गल्प-ससार-माला
(भाग—१-८) प्रत्येक ||)

नाटक

५२. आधीरात
(जनार्दन राय) १||)
५३. छ एकाकी (विविध) १)
५४. प्रेम की वेदी
(प्रेमचन्द) |||)
५५. बडे म्याँ
(इन्द्र वसावडा) ||)
५६. बरगद
(श्रीकृष्ण श्रीधराणी) |||)
५७. सृष्टि का आरम्भ
(बर्नार्ड शॉ) ||)

काव्य

५८ बिखरे फूल
(रघुवीरसिंह) १)
५९ तूणीर (मगला मोहन) |||)
६० मुरली माधुरी
(सूरदास) |=)
६१ रूपराशि
(रामकुमार वर्मा) |||)
६२ हिल्लोल (सुमन) १)

बालोपयोगी

६३ कुत्ते की कहानी
(प्रेमचन्द) |||)
६४ जगल की कहानियाँ ,, |=)
६५. दुर्गादास ,, ||)
६६. रामचर्चा ,, २)
६७ कलम, तलवार और त्याग-
जीवनियाँ (प्रेमचन्द) १)

विविध

६८. कुछ विचार
(प्रेमचन्द के निबन्ध) २)
६९. कल की बात
(आत्मकथायें) १)
७०. विश्वामित्र
(उदयशकरभट्ट का गीतिनाट्य) ||)
७१. स्त्री-दर्शन
(महिलोपयोगी) १)
७२. राष्ट्र-सघ और विश्व-शान्ति
(रामनारायण यादवेंदु) ३||)
७३ आजाद-कथा भाग १-२
(प्रेमचन्द) ३)
७४. नया हिन्दी-साहित्य : एक दृष्टि
(प्रकाशचन्द्र गुप्त) ||)